
Durga Sah Municipal Library
Naini Tal
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class No. 891.8
Book No. K60S
Reg No. 4828

साहित्य का स्वर्ग

लेखक
रोमन किम

१९६०
साहित्य प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली।

प्रकाशक
साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा,
दिल्ली ।

१९६०
मूल्य : दो रुपया

मुद्रक
कामनी प्रिंटर्ज,
बल्लीमारान, दिल्ली ।

साहित्य का स्वर्ग

[१]

दूर से वह जगह कुमकुमों के बन्दनवार की भाँति दिखाई देती थी। चौड़ी और दूर तक, बहुत दूर तक, चली गई सड़क के उस छोर पर वह स्थित थी। लगता था जैसे अन्तिम मंजिल वही हो, उसके बाद और कुछ नहीं था।

एकाएक मैं समझ नहीं सका कि यह क्या था। इस तरह की चीज पहले कभी नहीं देखी थी। बढ़ते कौतुक के साथ-साथ मेरे कदम भी बढ़ते गये। मैंने निश्चय किया कि इसका पता लगाये बिना पाँव पीछे नहीं हटाने चाहिएँ।

कह नहीं सकता, कितनी देर और कितनी दूर मुझे चलना पड़ा। मेरी घड़ी ने टिक-टिक करना बन्द कर दिया था। उसमें चाबी तक देने का मुझे ध्यान नहीं रहा था। जैसे-जैसे मैं बन्दनवार के निकट पहुँचता गया, वैसे-वैसे उसका आकार भी बढ़ता गया। मेरा अनुमान है, उसकी ऊँचाई 'आजादी की प्रतिमा' जितनी अवश्य रही होगी। उसका ऊपरी भाग सबसे अधिक चमक रहा था। निकट पहुँचने पर तीन अक्षर उभर कर आँखों के सामने आ गये—यु. एस. पी.।

पास ही बैंच पर एक आदमी बैठा था। उसके पास जाकर बड़ी मुलामियत से मैंने पूछा,—"यह क्या है?"

"यह बन्दनवार है," उसने बड़ी तत्परता से समझाते हुए कहा,—"एक निराली दुनियाँ का प्रवेश-द्वार। इस दुनियाँ में किसी की हुकूमत नहीं है,—यानी इसमें रहने वालों के सभी खून माफ हैं। ये जो तुम तीन अक्षर देख रहे हो, इनका अर्थ है,—यु. से युनाइटेड, एस. से स्टेट्स और पी. से परनासस!"

"ओह," मैंने सोचा, "तो यह संयुक्त राज्य अमरीका का परनासस है,—वह जगह जहाँ अमरीकी साहित्य, संस्कृति और कला के देवी-देवता निवास करते हैं।"

लेकिन मुझे निराश होना पड़ा। साहित्य और संस्कृति के देवी-देवाताओं में से एक भी प्रतिमा मुझे वहाँ नहीं दिखाई पड़ी। फिर इसकी बनावट ने भी मुझे स्तब्ध कर दिया। मैं निश्चय नहीं कर सका कि किस शैली की बनावट से कहा जाये, डोरिक, आयोनिक, कोरिन्थियन अथवा इन तीनों की मिलावट से बना एक निराला अजूबा था।

इसकी बनावट का, इसकी वास्तविक रूप-रेखा का, पता लगाने में एक और भी कठिनाई थी। ऊपर-से-नीचे तक विज्ञापनों ने इसे थोप रखा था,—बैंकों के विज्ञापन; उद्योग-धन्धों और बीमा-कम्पनियों के विज्ञापन; थोक और फुटकर दुकानदारों के विज्ञापन; किताबें छापने वालों, अखबार और मासिक पत्रों, समाचार भेजनेवाली एजेंसियों, रेडियो और फिल्मों के विज्ञापन; मार्लबारो को सिगरेटों, कोलीनूज दन्त-मंजन, नाखूनों के पालिश, राजारानी साबुन, रबड़ की चोली, केनटकी की प्राचीन ह्विस्की और इसी तरह न जाने कितनी चीजों के विज्ञापनों ने इसे ढक रखा था।

परनासस की, संस्कृति के उस केन्द्र की जहाँ साहित्य और कला के देवी-देवता निवास करते हैं, मेरी कल्पना दूसरी ही थी। यहाँ वह कुछ नहीं था। मेरी चकित आँखों के सामने साहित्य के देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ और उनके निवास-स्थान नहीं, आकाश से होड़ करने वाली ऊँची इमारतें खड़ी थीं। सिगरेट की खाली डिब्बियों को एक के ऊपर एक रखकर खड़ी करने से जो ढाँचा तैयार होता है, दूर से देखने पर ये इमारतें ठीक वैसी ही मालूम होती थीं।

यहाँ जो कुछ देखा और सुना, उसी को शब्द-बद्ध करने के लिए आज मैं बैठा हूँ। हर बात के प्रमाण दिये जा सकते हैं। अमरीकी पत्रों और किताबों में जो कुछ छपता है, वह इसका सबूत है। बिना कैमरे के ही मैंने एक चल-चित्र का निर्माण कर लिया है। इस चलचित्र का हर दृश्य असलियत से भरा

है। कथानक के सूत्रों और दृश्यों को एक सिलसिले में बाँधने के लिए जरूर कहीं-कहीं कुछ कल्पना की शरण लेनी पड़ी है, बाकी सब जैसा-का-तैसा है। वास्तविकता में जरा भी कमी नहीं आने दी गई है।

साहित्य और संस्कृति के देवी-देवताओं के इस केन्द्र का अमरीका के किसी भी नक्शे में अता-पता नही मिलेगा। जितने भी रंगे-चुने नक्शे और बड़ी-से-बड़ी गाइड-बुकें अब तक निकली हैं, उनमें बाइस पंसेरी के भाव से बिकने वाले धानों और घास-फूंस तक का तो जिक्र मिल जायगा, पर इस केन्द्र का नहीं। फिर भी यह केन्द्र उतना ही वास्तविक है जितना कि निआग्रा का जलप्रपात, चेज नेशनल बैंक, या ट्रूमेन की योजना।

भौगोलिक रूप में इस केन्द्र का कहीं कोई अस्तित्व नहीं है, लेकिन फिर भी आज के अमरीका का यह एक अंग है। इसकी एक सीमा पर वाल-स्ट्रीट, शेयर मार्केट और दूसरी बड़ी-बड़ी संस्थाएं हैं; और इसके दूसरी ओर लास एंजेलस का सुप्रसिद्ध हालीवुड है। अमरीका के तैंतीस बड़े उद्योग-केन्द्र भी, किसी-न-किसी रूप में, इसके दामन से लिपटे हुए हैं।

[२]

एक होटल में जाकर मैंने पड़ाव डाला और निश्चय किया कि सबसे पहले वहाँ के प्रमुख प्रशासक से मिलना चाहिए। उनसे मिलने का समय तय करने के लिए टेलीफोन उठाने जा ही रहा था कि प्रशासकीय दफ़्तर के एक अधिकारी ने,—बौस ने,—मेरे कमरे में प्रवेश किया। उम्र पचास के लगभग, देखने में बहुत ही भला आदमी, लाल चेहरा और सफेद बाल,—किसी नाटक के सूत्रधार और अमरीकी सीनेट के सदस्य के बीच की नसल का जीव मालूम देता था।

उसने बताया कि प्रमुख किसी काम से वाशिंगटन चले गए थे। लेकिन कोई बात नहीं। वह खुद भी, जन-सम्पर्क-अधिकारी होने के नाते, साहित्य और संस्कृति के इस केन्द्र के कोने-कोने से मुझे परिचित करा सकता है।

"और मैं एक साहित्यिक पत्र का सम्पादक भी हूँ," बौस ने कहा—

"मेरा अखबार बहुत बड़ी तादाद में छपता और बिकता है। मेरा ख्याल है, मुझ से अच्छा पथ-प्रदर्शक दूसरा नहीं मिलेगा। आप जो कुछ भी देखना चाहते हैं, सब दिखा दूँगा।"

"अच्छी बात है," मैंने कहा,—"सबसे पहले मुझे यहाँ के सबसे अधिक प्रसिद्ध लेखकों से मिला दीजिये।"

बौस ने अपना निचला होंठ बाहर को निकाल लिया।

"नहीं, यह सब कुछ नहीं," बौस ने कहा,—"आखिर तुम्हारा यहाँ आने का उद्देश्य क्या है,—हमारे सांस्कृतिक केन्द्र का सही चित्र देखना चाहते हो या कुछ नामी लोगों के दस्तखतों के नमूने जमा करने के लिए तुम यहाँ आये हो!"

"निश्चय ही मेरा उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के इस केन्द्र का सही चित्र पाना है," अपने कंधे सिकोड़ते हुए मैंने कहा,—"लेकिन फिर भी…"

"मैं सब समझता हूँ," बौस ने बीच में ही बात काटकर कहा,—"हमारी सांस्कृतिक दुनियाँ का अध्ययन करने के लिए जितने भी लोग बाहर से आते हैं, वे सब उन्हीं लेखकों में अधिक दिलचस्पी रखते हैं जिनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली है। बाहरी दुनियाँ का जहाँ तक सम्बन्ध है, ये बड़े लेखक ही उनकी नजर में अमरीका का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये लेखक उन बड़े होटलों की तरह हैं जिनमें विदेशी यात्रियों को बहुधा ठहराया जाता है। लेकिन इन होटलों के जीवन से अमरीकी जीवन का अन्दाज नहीं लगाया जा सकता। अगर तुम वास्तव में कुछ देखना चाहते हो तो तुम्हें उन छोटे चायघरों में जाना होगा जहाँ अमरीका के साधारण निवासी जाते हैं,—या जा सकते हैं।"

"मैं आपके उस साहित्य से परिचित होना चाहता हूँ जिसे अमरीका के अधिकांश लेखक लिखते हैं, अधिकांश प्रकाशक छापते हैं, अधिकांश पाठक पढ़ते हैं।" मैंने कहा—

"बहुत ठीक," बौस ने कहा,—"मैं तुम्हें उँगली पर गिने जाने वाले दो-चार चोटी के लेखकों के पास नहीं, बल्कि ऐसी जगहों में ले चलूँगा जहाँ

अमरीका की लाखों-लाख जनता के लिए, सामूहिक रूप में, साहित्य और संस्कृति का उत्पादन होता है।

हमारा यह केन्द्र," खिड़की के पास जाकर बाहर की ओर संकेत करते हुए उसने कहा,—"आध्यात्मिक भोजन के उत्पादन का कारखाना है। अमरीका के असली साहित्य का,—उस साहित्य का जो अमरीका की अधिकांश जनता पढ़ती है,—यहीं निर्माण होता है। दुनियाँ में इस तरह का केन्द्र और कहीं नहीं मिलेगा। साहित्य और संस्कृति का हमारा यह केन्द्र अमरीका का गौरव है।"

"और वे कहाँ रहते हैं,—मेरा मतलब उन लेखकों से है जिनकी तुम बड़े होटलों से तुलना करते हो ?"

अपनी ठोड़ी को झटका देकर दूर दिखाई पड़ने वाले पेड़ों के झुरमुट की ओर बौस न संकेत किया। पेड़ों के बीच से कुछ झोंपड़ियों की खपरैलें दिखाई पड़ रही थीं।

"उन्हें हमने नगर से बाहर खुली हवा में पहुँचा दिया है," बोस ने कहा,—"वहाँ वे बहुत आराम से हैं। शान्ति के साथ साहित्य-साधना करते हैं और बाहर से जब कोई आता है तो वे आराम के साथ उसे अपना आटोग्राफ (दस्तखत) दे सकते हैं।"

नीचे, होटल के दरवाजे के सामने, कार खड़ी थी। हम दोनों उसमें जाकर बैठ गये। बड़े बाजार में से होकर हमारी कार गुजरी। दोनों ओर बड़े-प्रकाशन-घर और अखबारों के दफ्तर थे। छोटे-बड़े, सभी कद और उम्र के, स्त्री और पुरुषों के समूह बड़ी-बड़ी इमारतों के बाहर जहाँ-तहाँ खड़े दिखाई दे रहे थे।

"देखते हो इन्हें," उनकी ओर संकेत करते हुए बौस ने कहा,—"ये सब लेखक हैं। जानते हो, इनकी कुल संख्या कितनी है,—एक लाख से अधिक। इनमें से पैंतीस हजार केवल लिखने पर गुजर करते हैं, बीस हजार लिखने के साथ-साथ दूसरा धंधा भी करते हैं और बाकी के लिए लिखना एक शौक है। सब मिलकर जब किताबें लिखते हैं तो......"

मेरे चेहरे पर विनम्र अविश्वास से पूर्ण मुस्कराहट देखकर बौस ने कहा, "इन आँकड़ों को लेखकों के एक पत्र ने १९४१ में प्रकाशित किया था। लेकिन ये आँकड़े काफी पुराने हैं। सैनिकों के युद्ध से लौटने और युद्ध का माल तैयार करने वाले कारखानों के बन्द हो जाने के कारण इनकी संख्या अब असंदिग्ध रूप में अधिक है। पाँच लाख से ऊपर। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि अमरीका में साहित्य फूल-फल रहा है?"

मैंने लेखकों से भरे फुटपाथ पर एक नजर डाली। उनमें से कुछ एक जगह बैठे सेण्डविचें चबा रहे थे, कुछ उनकी सेण्डविचों को ईर्ष्या की नजर से देख रहे थे। मुझे ऐसा लगा मानो फुटपाथ पर सरस्वती के उपासकों की नहीं, बल्कि बेकारों की एक भीड़ जमा थी। उनका कोई क्यू नहीं लगा था, बल्कि जो जरा तगड़ा होता था दूसरों को धक्का देकर वह आगे निकल जाता था। एक युवती फुटपाथ पर बिखरे अपनी पाण्डुलिपि के पन्नों को बटोर रही थी। वह सुबकियाँ भर रही थी।

[३]

कार तेजी के साथ गुजर रही थी। चमकीली और रँगी-चुनी किताबों और अखबारों से लदी दूकानों की बस एक झाँकी ही मिल पाती थी। कार की गति को धीमा करके एक दूकान की ओर बौस ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

"देखते हो इन अखबारों को, ये साधारण पाठकों के लिए निकलते हैं। जितने अधिक ये छपते हैं उतने दुनियाँ में और कोई नहीं छपते। 'कोलियर' नामक पत्र को ही लीजिये। यह पच्चीस लाख छपता है। 'सैटर्डे ईवनिंग पोस्ट' पत्र तीस लाख छपता है। गाँव में रहने वालों के लिए अलग पत्र निकलते हैं। ये भी लाखों में छपते हैं। औरतों का पत्र 'होम जरनल' बहुत चलता है; लगभग पचास लाख छपता है। ढेर सारे जन-प्रिय मासिक, साप्ताहिक पत्र निकलते हैं। इनमें सभी तरह का साहित्य छपता है। सस्ते अखबार अलग निकलते हैं जिन्हें 'पल्प मैगजीन' कहते है। इन सब के पन्नों को भरने के लिए लेखकों की एक अच्छी-खासी फौज की जरूरत होती है। चोटी के दो-

चार लेखकों का तो इस भीड़ में खोजने पर भी कहीं पता न चले। लेखकों की इतनी बड़ी सेना को तैयार रने में अमरीका दुनियां में सब से आगे है।"

बौस ने गर्व के साथ मेरी ओर देखा और एक ऐसी दुकान के सामने जाकर सहसा कार को रोक दिया जिसका अग्र-भाग जेबी किताबों की बन्दनवार से सजा हुआ था।

"इन्हें हम जेबी किताब कहते हैं," बौस ने कहा,—"जेबी किताबें दुनियाँ की संस्कृति को अमरीका की बहुत बड़ी देन हैं। जेबी किताब को छोड़ कर हमारे साहित्य का अध्ययन करना ऐसा ही होगा जैसा कि किसी देश की पैदल सेना को छोड़कर उसकी सैनिक शक्ति का अध्ययन करना। अमरीकी साहित्य में जेबी किताबें पैदल सैनिकों का स्थान रखती हैं। अमरीका जेबी किताबों का जन्म-स्थान है,—सस्ती-की-सस्ती, इतनी हल्की और इतनी छोटी कि जेब में रख कर चाहे जहाँ चले जाइये।"

"मुझे ऐसा लगता है," बीच में ही मैंने मुलामियत से कहा,—"ऐसी किताबें यूरोप और एशिया के लिए एकदम नयी नहीं हैं। चीनी शब्द-कोषों में, जो कि अमरीका का पता लगाने से भी बहुत प्राचीन हैं, 'सुइजेन' शब्द मिलता है। इस शब्द का अर्थ है 'आस्तीनी पुस्तक',—ऐसी पुस्तक जिसे आस्तीन में रखा जा सके।"

हाथ के झटके से बात के प्रभाव को हवा में उड़ाते हुए बौस ने कहा, —"निरी बकवास! इन चीनियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। जेबी किताबों का इतिहास केवल १९३९ से शुरू होता है। इससे पहले उनका कहीं अस्तित्व तक नहीं था। मैं तुम्हें थोड़े में सब बता दूंगा।"

जेबी किताब के इतिहास के बारे में बौस ने जो कुछ बताया, उसका सार निम्न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है :

"युद्ध के कई साल पहले से ही प्रकाशक यह अनुभव करने लगे थे कि औसत अमरीकी पाठक की खरीदने की शक्ति बराबर गिरती जा रही है। किताबों के दाम, आमतौर से, दो या तीन डालर होते थे, जो कि बहुत अधिक थे। किताबें बिकती नहीं थीं और प्रकाशक अपनी लागत तक नहीं

वसूल कर पाते थे। खरीदारों की स्थिति की जाँच करने के लिए कुछ पत्रों ने 'गैलप पोल' शुरू की। तब पता चला कि अमरीका की आबादी के एक प्रतिशत का दो बटा दसवाँ भाग किताबें खरीदता है। फलतः प्रकाशक केवल ऐसी किताबें छापने लगे जिनकी बिक्री निश्चित हो,—जैसे बेसबाल टीम की सूची, स्त्रियों के लिए नुस्खे, भोजन बनाने के तरीके। लेकिन एक प्रकाशक, रोबर्ट-डि-ग्राफ उसका नाम था, सूझ-बूझ का आदमी था। सोचते-सोचते उसने रात बिता दी और सुबह के प्रकाश के साथ जेबी किताबों का विचार उसके दिमाग में उदय हुआ। इस प्रकार १९३९ में औसत पाठक को विजय करने के अभियान का अमरीका में श्रीगणेश हुआ। पन्द्रह से पच्चीस तक के सैटों में सस्ती पुस्तकों के सामूहिक उत्पादन की योजनाएँ चालू की गई। पुस्तकें, दाम की दृष्टि से ही नहीं, आकार-प्रकार की दृष्टि से भी जेब के अनुकूल होती थीं।"

इन जेबी किताबों से बाजार पट गया। किताबों और अखबार वालों के यहाँ ही नहीं, अन्य दुकानों पर भी ये दिखाई पड़ने लगीं। खुजली की दवा लेने आप किसी दवाफरोश के यहाँ जाइए और वहाँ से, दवा की शीशी के साथ-साथ, जेबी किताब भी ले आइए। देहातों में प्रचार करने के लिए सबसे अधिक उत्साही और वाचाल ट्रैवलिंग एजेन्टों की एक लम्बी सेना खड़ी हो गई। बड़े नगरों की रंगी चुनी सुन्दर स्त्रियों के हृदयग्राहक फोटो बेचने के अपने समृद्ध अनुभव से उन्होंने पूरा लाभ उठाया। आखिर जेबी किताबों का अभियान सफल हुआ। युद्ध के दौरान में, कागज की तंगी के कारण, जेबी किताबों की दिग्विजय और भी पूर्ण हो गई। जेबी किताबों ने बाजार पर कब्जा कर लिया।

"दूसरे महायुद्ध के तीन नतीजे निकले," बौस ने अपने लैक्चर का अन्त करते हुए कसा,—"पहला,—धुरी राष्ट्रों का पतन; दूसरा,—अणु-बम का निर्माण और तीसरा,—जेबी किताबों की विजय!"

अमरीकी संस्कृति की वाहक इन जेबी किताबों के नामों पर मेरी नजर घूम गई,—"पान का चौका, कैनेरी हत्याकाण्ड, जहर की पुड़िया और गोटे की किनारी, तीन मिनट में युद्ध, नरक के कीड़े ··!"

"इन किताबों पर रंग-बिरंगे हाशियों को देखकर तुम्हें आश्चर्य होता होगा," बौस ने उत्सुकता से कहा,—"यह सब खरीदारों की सुविधा के लिए है। हाशिये का रंग देखकर एक सैकेण्ड में पता चल जाता है कि यह किस विषय की पुस्तक है। हरा रंग, हमारे आलोचकों की राय में, जनता का रंग है क्योंकि इस रंग वाली किताबें जनता सब से अधिक खरीदती है। हरा रंग जासूसी उपन्यासों का रंग है। इन्हें पढ़कर पाठकों की बुद्धि तेज़ होती है, बड़ी-बड़ी पेचीदा बातों का रहस्य खोलने की उन्हें आदत पड़ जाती है। औसत पाठक जासूसी उपन्यास बहुत पसंद करता है। औसत पाठक ही क्यों यह सभी जानते हैं कि अमरीकी सीनेट के सदस्य वाण्डनवर्ग और जनरल मैकार्थर भी अधिकतर जासूसी उपन्यास ही पढ़ते हैं।"

"उन्हें गम्भीर साहित्य पढ़ने का समय भी नहीं मिलता होगा," मैंने कहा।

"हाँ, वह बहुत ही व्यस्त आदमी हैं," बौस ने कहा,—"जो भी हो, जासूसी साहित्य का प्रभाव बहुत व्यापक है। रोचक तो वह होता ही है, साथ ही पाठक को उससे लाभ भी बहुत होता है। इसलिए जासूसी साहित्य के उत्पादन पर हम अधिक ध्यान देते हैं। अभी तक तो हमने जेबी किताबें निकाली हैं। अब ऐसी किताबें निकालने का भी इरादा है जिन्हें चाहें तो पतलून की जेब में भी रख सकते हैं। औरतों के लिए भी खास तौर से छोटी किताबें निकालेंगे जिन्हें वे, लिपस्टिक और पाउडर के साथ, अपने बटुओं में रख सकें। पुस्तकें हर दृष्टि से पोर्टेबिल,—हलकी-फुलकी और उठाऊ,—होनी चाहिएँ, यही हमारा सिद्धान्त है।

"लेकिन पाठक की जेब का ही नहीं, उसके दिमाग का भी तो ध्यान रखना चाहिए," मैंने कहा।"

"सो तो है ही," बौस ने कहा,—"न दिमाग पर बोझ पड़े, न जेब पर, यही हमारी सफलता का मूल मंत्र है। लोगों पर वैसे ही बहुत बोझ लदा है। किताबों का बोझ और क्यों बढ़ाया जाए?"

कार की गति को बौस ने फिर तेज कर दिया। जेबी किताबों को छोड़कर कार आगे बढ़ चली।

[४]

एक बहुत बड़े सिनेमा-घर के सामने हम पहुँचे । सिनेमा में 'सदर्नर', नामक पुस्तक पर बना फिलम चल रहा था । शीघ्र ही आनेवाले फिल्मों में एक सामरसेट मोम की किताब पर बने फिल्म 'तलवार की धार' का पोस्टर लगा था । इस फिल्म में हिमालय के दृश्य दिखाये गये थे । पोस्टर में लिखा था कि चालीस लाख डालर खर्च करके ये दृश्य लिए गए हैं और इस फिल्म को हिन्दुस्तान में भी बनाया गया है ।

"सिनेमा-साहित्य का सबसे बड़ा साथी है," बौस ने कहा,—"सिनेमा के जरिये लाखों अमरीकी सभी युगों और देशों के साहित्य से परिचित हो चुके हैं । देखो, मेरी बात का तुम्हें अभी सबूत मिल जाएगा।"

बौस ने एक लड़के को जो हाथ में बेसबाल का दस्ताना और बगल में एक 'चेहरा' दबाये था, रोक कर पूछा,–"जरा यह तो बताओ कि तुम किन बड़ी किताबों के नाम जानते हो ?"

"तीन तिलंगे, काउण्ट आफ माण्टे किस्टो, आइवन हो, डायरी आफ ए हाउस मा······"

"बस-बस, अब यह बताओ कि इन किताबों से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?"

सिनेमा के पर्दे पर "मैंने इन सबकी फिल्में देखी हैं ।"

"धन्यवाद !" बौस ने कहा,—"देखा तुमने, सिनेमा किस प्रकार साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों का जन-साधारण में प्रचार करता है । लेकिन अभी ठहरो । किसी दूसरे से भी पूछना चाहिए ।"

बौस ने इस बार यह सवाल पूछना निश्चय किया,—"आधुनिक लेखकों में तुम्हें कौन सबसे अच्छा लगता है ?" फिर मुझ से कहा, "भीड़ में से किसी एक को चुनकर मैं उससे यह सवाल पूछूँ । मैंने एक बुजुर्ग मगर चुस्त कपड़े पहने स्त्री को चुना, जो अभी बालों का शृंगार करने वाली एक दूकान से बाहर निकली थी । मेरा सवाल सुन, वह कुछ लजाकर मुस्करा दी ।

"समझ में नहीं आता कि पहले किसका नाम लूँ। मैंने बहुत कुछ पढ़ा है। जान स्ट्रदर की लिखी हुई, 'श्रीमती मिनीवर की प्रेम लीला,' अगाथा क्रिस्टी लिखित 'लिक्स में हत्या काण्ड,' जेम्स हिल्टन की 'विलुप्त क्षितिज'..."

बौस ने बीच में ही उसे रोक दिया।

"बस, एक सवाल और है। इन पुस्तकों को तुमने अपने-आप चुना था या किसी दूसरे ने इन्हें पढ़ने की तुमसे सिफारिश की थी ?"

"मैंने पहले इनके फिल्म देखे। जब दिलचस्पी बढ़ी तो किताबों को भी पढ़ना शुरू किया।"

बौस ने उसे धन्यवाद देकर विदा कर दिया, और हम आगे बढ़ गये।

"क्यों, तुम्हें कुछ यकीन हुआ ?" बौस ने कहा,—"यह स्त्री औसत पाठक का प्रतिनिधित्व करती है। सिनेमा न होता तो क्या वह इन सब किताबों को जान पाती ?"

बौस ने अपनी घड़ी पर नजर डाली और कार में लगे रेडियो को चालू कर दिया। रेडियो पर किसी स्त्री की आवाज आ रही थी। प्रसिद्ध किताबों के नामों पर बनी चोलियों, जाकेटों, गार्टरों आदि की प्रशंसा की जा रही थी,—'नाना' चोली, 'पिकविक' जाकेट, 'रोमियो' सैण्ट और 'जुलियट' पाउडर का परिचय दिया जा रहा था। इसके बाद सामयिक साहित्य की आलोचना का प्रोग्राम शुरू हुआ।

"अमरीका में जितनी भी रेडियो-कम्पनियाँ हैं," बौस ने कहा,—"सभी साहित्यिक प्रोग्राम सुनाती हैं। कभी कोई उपन्यास, कभी कहानी, कभी आलोचना। अतिशयोक्ति न होगी अगर यह कहा जाए कि अमरीका का वायु-मण्डल साहित्य से सराबोर रहता है..."

रेडियो पर इस समय एक कहानी सुनाई जा रही थी।

"मेरी प्यारी बिली, धीमे स्वरों में अब कोई दूसरा गीत गाओ। मेरा सिर बुरी तरह दर्द कर रहा है।"

"इतना कहकर जब बिली के पति ने दूसरी ओर करवट बदली तो

उसने काफी के प्याले में चुपके से जहर की पुड़िया छोड़ दी। पलक झपकने में यह काम हो गया और बिली का हृदय खुशी से उछलने लगा। होठों को मींच कर उसने अपनी मुसकराहट को बाहर आने से रोक दिया। आखिर इस बार उसने अपनी इच्छा पूरी कर ली······"

बौस ने रेडियो बन्द कर दिया और एक प्रतिमा की ओर उसने संकेत किया, जिसके पास से हमारी कार गुज़र रही थी।

"यह कँगारू है,—साहित्यिक श्रेष्ठता का प्रतीक !" बौस ने बताया।

मेरी भौंहें चढ़ गई—"साहित्यिक श्रेष्ठता का प्रतीक ! क्या तुम्हारे लेखकों को यह अच्छा लगता है कि उनकी श्रेष्ठता का प्रतीक एक ऐसी चीज़ को बनाया जाय ?"

"क्यों, इसमें बुरा लगने की क्या बात है ?" बौस ने कहा,—"बल्कि यह कँगारू उन्हें प्रेरणा देता है। यह उनकी आकांक्षा का प्रतीक है। जब किसी लेखक की किताब का संस्करण दस लाख से ऊपर पहुँच जाता है तो जेबी किताब के प्रकाशक उसे चाँदी का कंगारू भेंट करते हैं। यह कंगारू जेबी किताबों के कवर पर भी छपता है। किसी लेखक को वह मिले, इससे बढ़कर सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है ? जो भी हो, इस प्रकार हम अपने लेखकों को प्रोत्साहित करते हैं।"

[५]

बौस ने लेखकों को प्रोत्साहित करने के अनेक रूपों का वर्णन शुरू कर दिया। किताबों और अखबारों के प्रकाशक प्रतियोगिताएँ चालू करते हैं। फिल्म-कम्पनियाँ और बुक-क्लब भी इसमें बहुत बढ़े-चढ़े हैं। साहित्यिक पुरस्कारों में पुलिटजर पुरस्कार बहुत प्रसिद्ध है। मूल्य की दृष्टि से तो वह अधिक नहीं होता, लेकिन ख्याति उसकी बेहिसाब मानी जाती है।

बुक-क्लब पाठकों को अपने लिए किताबें चुनने की जहमत से बचा लेते हैं। अपने सदस्यों के सामने कभी इस और कभी उस किताब को वे उछालते रहते हैं। अमरीका में ये बहुत जनप्रिय सिद्ध हुए हैं। पाँच बड़े

बुक-क्लबों के सदस्यों की संख्या पेंतालीस लाख से कम न होगी।

बौस ने मेरे हाथ में एक अखबार थमा दिया जिसमें बुक-क्लब के सदस्य बनने का विज्ञापन छपा हुआ था—विज्ञापन में लिखा था :

"अब तुम्हें किसी भी ऐसी सभा सोसाइटी जहाँ साहित्य के विषय में चर्चा हो रही हो, मूर्ख बनने की जरूरत नहीं।"

"साहित्य और संस्कृति के बारे में सारी जानकारी प्राप्त कर अब तुम अपनी प्रेमिका की नजरों में ऊँचे उठ सकते हो"

"६ डालर भेजकर हमारे बुक-क्लब का सदस्य बनने पर तुम एक वर्ष तक ऊँची-से-ऊँची साहित्य-गोष्ठी पर अपना सिक्का जमा सकते हो"

जेबी जासूसी साहित्य को उछालने वाले बुक-क्लबों की फ़ीस और भी कम थी,—एक डालर में जासूसी की सबसे बढ़िया सात नई किताबें।

"मैं तुम से दो सवाल पूछना चाहता हूँ," बौस से मैंने कहा,—तुम्हारे बुक-क्लब क्या कभी ड्राइजर,सिन्क्लेयर, काल्डवेल या हावर्ड फास्ट की पुस्तकों के पढ़ने की भी सिफारिश करते हैं ?, और तुम्हारी 'अण्डा और मैं' नामक किताब क्या बला है जिसकी ढाई लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं?"

बौस ने मेरे पहले सवाल का जवाब गोल कर दिया। दूसरे सवाल के बारे में कहा,—'अण्डा और में' एक उपन्यास है। यह एक गरीब औरत की सच्ची कहानी है जिसने ईश्वर पर भरोसा रखते हुए अपनी सूझ-बूझ के सहारे जीवन-भर गरीबी से संघर्ष किया। अन्त में उसका भाग चमका और अण्डों का उसका व्यापार खूब फला-फूला। कुछ हजार मुर्गियों की सेना जमा करके उसने अपना भाग्य पलट लिया। अपने संघर्ष की इसी कहानी को उसने लिखा है। हर अमरीकन को इसे पढ़ना चाहिए।। बुक-क्लबों ने इसकी सिफारिश की, पत्रों ने इसकी प्रशंसा के पुल बाँधे, फिल्म-कम्पनी ने इसका फिल्म बनाया, जिसमें हमारी सुप्रसिद्ध अभिनेत्री क्लाडेट कोलबर्ट ने मुख्य भूमिका का निर्वाह किया है। नतीजा इसका यह है कि एक गुमनाम पहाड़ी इलाके में रहने वाली यह औरत, जिसका नाम बैटी मैक्डोनल्ड है, मुर्गियाँ

पालते-पालते एक लेखिका बन गई।

किताबों की एक दुकान के सामने कुछ लड़के इश्तहार बाँट रहे थे हमारी कार में भी उन्होंने कुछ इश्तहार फैंक दिये। उनमें से कई मेरी गोदी में आ गिरे। उनमें लिखा था :

"आधुनिकतम 'अण्डा और मैं' विद्युत् इन्क्यूबेटर खरीदिए।"

"मेरी मुलायम चमड़ी देखकर सभी को ईर्ष्या होती है। 'अण्डा और मैं' साबुन इस्तेमाल करने का यह नतीजा है"

"बैटी टाई लगाकर पहली ही नजर में अपनी प्रेमिका को अपना बना लीजिए।"

मैंने बौस के सामने ये इश्तहार रख दिये। उन्हें देखकर उसने अपनी गरदन को झटका दिया।

"इनसे पता चलता है कि कहानी और उपन्यास लिखकर ही नहीं, दूसरी चीजें लिखकर भी जनप्रिय बना जा सकता है। ललित साहित्य के अलावा साहित्य के अन्य जितने भी रूप हैं, उन सब को हम गैर-ललित नाम से पुकारते हैं। उदाहरण के लिए जीवनियों को लीजिए। हमारे बुक-क्लब जीवनियों की ओर खास ध्यान देते हैं। आखिर सभी को मालूम होना चाहिए कि हमारे सुप्रसिद्ध देशवासियों के जीवन का रहस्य क्या है? करेन्ट हिस्ट्री नामक मैगजीन साल में गैर-ललित साहित्य की सबसे अच्छी दस पुस्तकों की सूची प्रकाशित करता है। इनमें से एक राकफैलर की जीवनी भी है। फिर तुम्हें यह तो मालूम होगा ही कि पुलिटजर पुरस्कार कहानी-उपन्यासों पर ही नहीं, गैर-ललित साहित्य पर भी दिया जाता है। १९४६ में यह पुरस्कार कहानी-कविता लिखने वालों में से एक को भी नहीं मिला, वरन् न्यूहैरल्ड ट्रिब्यून के संवाददाता होमर बिगर्ट को दिया गया जिसने अमरीका की नीति को शान्ति और निस्वार्थ की चादर में लपेट कर अपने संवादों में उजागर किया था। इसी तरह न्यूयार्क टाइम्स के एक संवाददाता विलियम लारेंस ने भी यह पुरस्कार प्राप्त किया।"

"उसे किस लिए पुरस्कृत किया गया?" मैंने पूछा।

"लारेंस ने नौ अगस्त १९४५ को नागासाकी पर अणु-बम गिरते हुए देखा था। इसका उसने रोंगटे खड़े कर देने वाला विवरण भेजा। कहने का मतलब यह है कि राजनीतिक विवरणों की हमारे देश में बहुत माँग है। कुछ देशों के बारे में हम बहुत दिलचस्पी रखते हैं। सोवियत संघ के बारे में ढेर सारी किताबें निकली हैं,—युजीन, लियोन, बुलिट, लुई फिशर, ब्रूस ऐंट-किन्सन,—कहाँ तक नाम गिनाऊँ। इस मास की पुस्तक नामक बुक-क्लब ने, जिसके सदस्य दस लाख से ऊपर हैं, बास्टिन की लिखी हुई गैर-ललित साहित्य की किताब को बहुत ऊँचा स्थान दिया है।"

"वाल्टिन की किताब,—वह तो जर्मन खुफिया विभाग गेस्टापो के एजेण्ट था न ?"

"हाँ, यह सही है कि १९४१ में वाल्टिन को जर्मनी का जासूस होने के कारण गिरफ्तार किया गया था। अदालत में भी उसका जुर्म साबित हुआ। इसके अलावा उसने अपने एक आसामी की हत्या करने की भी कोशिश की थी। लेकिन इस सब से क्या, सोवियत संघ के बारे में उसने जो किताब लिखी है, वह वाकई दिलचस्प है। फिर जब खुद उसने अपना अपराध स्वीकार करके पश्चाताप प्रकट किया तो उसके विरुद्ध मुकदमा नहीं चलाया गया और उसे अमरीकी सेना में भर्ती कर के मोर्चे पर भेज दिया गया। वहाँ उसने खुफिया विभाग में बहुत काम किया। उसने एक किताब और भी लिखी थी। वह भी खूब बिकी।"

"वह अपनी पुस्तकें जर्मन-भाषा में ही लिखता होगा ?" मैंने पूछा।

बौस ने सिर हिलाते हुए कहा,—"तुम भी अजीब आदमी हो। अमरीका ऐसे आदमी को अमरीका क्यों भेजेगा जो अंग्रेजी न जानता हो। अपने मैगजीन के गैरललित साहित्य से सम्बन्धित विभाग का काम मैंने उसे और बुलिट को [illegible] था। और हाँ, एक बात और ऐसे ही याद आ गई। हमारा जो ताजा अंक प्रेस में है, उसमें एक बहुत ही सनसनीखेज खबर छप रही है। वह एक ऐसे देश के बारे में है जो पोर्टेचर्चिल के निकट कैनाडा में एकाएक अपनी सेनाएँ उतार देता है।"

"तो क्या इस तरह के संवाद भी गैर-ललित साहित्य की श्रेणी में गिने जाते हैं ?"—मैंने पूछा ।

"काल्पनिक इस में अगर कोई चीज है तो वह केवल शत्रु की सेना के कमाण्डर का नाम फीवाप्रोलोजेन्को है । मेरी राय में अखबारों में असली नामों का छापना असभ्यता है । तुम्हारे देश के अखबार जब अमरीका के बारे में लिखते हैं तो वे ऐसा ही करते हैं।"

"बहुत अच्छा", मैंने कहा—"मैं भी सभ्यता का दामन नहीं छोड़ूँगा। तुम्हारे इस केन्द्र के बारे में जब मैं लिखूँगा तो तुम्हारा नाम नहीं दूँगा जिससे हर कोई यह समझे कि मैंने केवल तुम्हारे बारे में ही नहीं, बल्कि तुम्हारी समूची बिरादरी के बारे में लिखा है।"

[६]

एक बड़ी इमारत के सामने जाकर कार रुक गई। यह बौस का आफिस था । एक लिफ्ट पर सवार होकर हम ऊपर चढ़े । कई बड़े कमरों में से होते हुए हम आगे बढ़े । लम्बी, पालिश से चमकती, मेजों पर लोग बैठे काम कर रहे थे । बिजली से चलने वाले टाइप राइटर खटखटा रहे थे । कुछ अपने हाथ से लिख रहे थे; कुछ मुँह से बोल रहे थे और स्टेनोग्राफर लिखते जाते थे; कुछ कैंची, कतरन और गोंददानी लिए बैठे थे । ये लोग कतरनों को सिलसिले से चिपकाते थे और फिर तैयार चीज टाइप राइटरों की खटाखट के बीच मेजों को पार करती हुई उप-संपादकों के पास पहुँच जाती थी ।

आफिस के कमरों में बैठे लोगों के बारे में एक चीज देखकर मैं चकित रह गया । ऐसी चीज मैंने पहले कभी नहीं देखी थी । लेकिन हो सकता है, मैं खुद अच्छी तरह न देख पाया हूँ । उनके पास से इतनी तेजी से गुजरना पड़ा था कि धुंधली झाँकी के सिवा और कुछ नहीं देख सका ।

बौस के दफ्तर में मैंने प्रवेश किया और एक भारी-भरकम डैस्क के पास रखे काउच पर बैठ गया । पास की एक मेज पर दरजनों टेलीफोन रखे थे,—जेबी किताबों की तरह इनके रंग भी अलग-अलग थे । बौस एक साथ

कई-कई लोगों से टेलीफोन पर बातें करता था। जब कभी कोई 'टकसाली' जवाब देना होता था तो बौस बटन दबा कर डिक्टाफोन को चालू कर देता था जिसमें से बौस की रिकार्ड की हुई आवाज अपने-आप निकलने लगती थी—"ठीक नहीं...कारण नहीं बता सकते...स्वीकृत है, केवल कुछ फेरफार करना होगा...स्वीकृत है, अपना पारिश्रमिक आकर ले जाओ...बहुत अच्छी रचना है। अगली किताब का भी कन्ट्राक्ट करलें...हमने केवल तुम्हारे कथानक का उपयोग किया है। शनिवार को अपना पैसा ले जाना। इस तरह की सामग्री और हो तो उसे भी लेते आना।"

एक डिक्टाफोन काले रंग का था और उस पर पीली पट्टियाँ बनी हुई थीं। यह डिक्टाफोन एक ही जवाब देता था,—"जहन्नुम में जाओ तुम !"

बौस ने इस तरह के अनेक टकसाली जवाबों के रिकार्ड बनवा लिए थे। बटन दबाते ही रिकार्ड बजने लगते थे और बौस एक साथ कितनों को ही निपटा देता था।

बौस की कुर्सी के बाईं ओर जैतून की छोटी-सी मेज पर एक सफेद रंग का टेलीफोन रखा था। इसकी घंटी बजते ही बौस के कान खड़े हो जाते थे और फिर बड़े ही अनुनय भरे स्वर में वह कहता था,—"बहुत अच्छा सरकार, यह काम अभी तुरंत हो जायगा।"

इसके बाद वह अनेक रंगों के अनगिनती बटनों को दबाना शुरू करता और डिक्टाफोन से आफिस के कर्मचारियों के लिए आदेश निकलने शुरू हो जाते।

सफेद टेलीफोन की घंटी बजने के बाद एक बार मैंने बौस को कुछ इस तरह के आदेश देते सुना,—

"तैमूर रबर वाली उस कहानी के बारे में जल्दी करो। मंगल से विद्रोह और उत्पात शुरू हो जायँगे। जल्दी-जल्दी सब काम करो। क्या कहा ? नहीं मोनसान्टो रसायन। अधिवेशन शुरू होने से पहले बेलजियम, कांगो और कोरिया के दक्षिणी द्वीपों और अफगानिस्तान की ओर खास ध्यान देना है। अपने संवाद-दाताओं को तुरन्त भेजो। जेबी संस्करणों के लिए उनके रोमांच-कारी यात्रा-वर्णन बहुत उपयुक्त होंगे। आदेश आये हैं कि जहरीले कीटाणु-

बर्मों को इन संवादों में विशेष महत्व मिलना चाहिए। विस्तृत निर्देश मिलने की हर घड़ी इन्तजार है।"

फिर भौंहें सिकोड़ कर मुझे सम्बोधित करते हुए बौस ने कहा,—"पाठकों के पास समय की बहुधा तंगी रहती है। यह देखकर हमने थोड़े में उपन्यासों और कहानियों का 'निचोड़' देने का निश्चय किया है। इससे साल में कम-से-कम डेढ़ हज़ार घंटों की बचत होगी। दृश्यों के लम्बे वर्णनों, परिस्थितियों और हृदय की हलचलों के विश्लेषणों,—इन सब को संक्षिप्त कर देने से काम चल जाता है। इस तरह केवल पाँच डॉलर में आप साल में पचास उपन्यासों की इतनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि किसी भी साहित्य-गोष्टी में तत्सम्बन्धी बहसों में हिस्सा ले सकें।"

"एक ऐसे देश से जहाँ अमरीका की अधिकांश सेनाएँ तैनात हैं 'वँदरकाल' नामक मैगजीन प्रकाशित होता है। जिसमें मुख्यतः अमरीकी समाचार-ऐजन्सियों के संवाद तथा कहानियाँ आदि छपते हैं।" मैंने कहा,—"इसमें एक सुप्रसिद्ध लेखक के उपन्यास का 'निचोड़' मैंने देखा था। चित्रों को मिला कर कुल दस पृष्ठों में ही सारा उपन्यास खत्म कर दिया गया था।"

"इसका मतलब यह है कि", बौस ने कहा,—"इस उपन्यास की जानकारी प्राप्त करने में पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं लगेंगे। राह चलते आप-हम इसे पढ़ सकते हैं। पाठकों के लिए इससे अधिक सुविधाजनक और क्या होगा? वैद्य लोग जिस तरह 'सत' निकालते हैं, उसी तरह..."

मेरे सामने एक मैगजीन पड़ा था। इसका नाम था, "साहित्य, कला और जन-जीवन"। इसके कवर पर लिखा था कि एक मिनट के भीतर साहित्य और जीवन की प्रत्येक दिलचस्प गति-विधि का परिचय प्राप्त कीजिए। एक पृष्ठ पर किताबों के नाम छपे थे और इन नामों के आगे नम्बर दिये हुए थे। नम्बर तीन का अर्थ था बेहद अच्छी किताब, नम्बर दो का अच्छी किताब और नम्बर एक का ऐसी किताब जिससे दूर रहना चाहिए। नम्बर एक वाली किताब में सिनक्लेयर ल्युविस और एडगरस्नो का नाम था। एडगरस्नो ने एक किताब लिखी थी जिसमें अमरीका की विदेश नीति की आलोचना की गई थी।

"और उधर क्या है ?" सहसा मेरा ध्यान कमरे के उस छोर पर चला गया जहाँ एक दरवाजा था, जिसके ऊपरी भाग में काँच जड़ा हुआ था।

बौस मुझे उस दरवाजे की ओर ले गया। जिस कमरे में अब हमने प्रवेश किया उसमें एक बड़ी मेज पर बैठे कई आदमी काम कर रहे थे। हालांकि वे सब भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े पहने हुए थे, फिर भी उन सबकी आकृतियों में एक जैसी अनहोनी विचित्रता देखकर मैं स्तब्ध रह गया। लेकिन यह विचित्रता ऐसी थी कि उस पर विश्वास नहीं हुआ। मैंने सोचा कि हो सकता है, मेरी ही नजर में कोई दोष पैदा हो गया हो।

"उन कमरों में जिनसे होकर हम यहाँ अभी आये हैं", बौस ने कहा,—"दो श्रेणी के लेखक काम करते हैं। पहली या निम्नतम श्रेणी के लेखक 'कापी' (पाण्डुलिपि) तैयार करने का प्रारम्भिक कार्य करते हैं,—उन्हें बने-बनाये कथानक दे दिये जाते हैं, इन कथानकों के आधार पर वे कहानी का खाका तैयार करते हैं या चित्रों की सीरीज का शब्द-परिचय लिखते हैं। चित्रों के मुकाबले में अगर उनका शब्द-वर्णन अच्छा बन जाता है तो उन चित्रों को उस वर्णन की शोभा बढ़ाने के लिए इस्तेमाल कर लिया जाता है। इस श्रेणी के लेखकों में केवल इतनी प्रारम्भिक योग्यता होनी चाहिए कि वे चीजों का वर्णन कर सकें, कथोपकथनों और ऐक्शन को आगे बढ़ा सकें। ये लेखक इस तरह जो अनगढ़ चीज तैयार करते हैं वह फिर दूसरी श्रेणी के लेखकों के पास जाती है जिनका काम कथानकों की रचना कर अनगढ़ चीजों को एक शक्ल देना होता है। कुछ कथानकों को तो ये दूसरी श्रेणी के लेखक खुद ही विकसित करते हैं और कुछ को पहली श्रेणी के लेखकों के पास फिर से लौटा देते हैं। इन सभी लेखकों को, कहना नहीं होगा अपनी कल्पना को काम में लाने की पूरी आजादी है।"

"और इस कमरे में," बौस ने काँच लगे दरवाजे की ओर संकेत करते हुए कहा,—"चोटी के लेखक बैठते हैं। ये अपने प्लाटों की खुद ही रचना करते हैं, खुद ही उन्हें लिखते हैं। ये लेखक पूरी तरह आजाद हैं और चाहे जो लिख सकते हैं। इन पर कोई बन्धन नहीं होता। निश्चित पारिश्रमिक पर

एक सप्ताह में शब्दों की निश्चित संख्या लिखकर देने के लिए हमने इनसे कन्ट्राक्ट कर लिए हैं।"

[७]

साहित्य के इन निर्माताओं की ओर बरबस मेरी नजर घूम गई और मन-ही-मन मैंने फिर अपने से यही कहा कि हो-न-हो कोई दृष्टि-दोष है जो मुझे ये ऐसे दिखाई देते हैं।

"जैसा कि तुम्हारी आँखों के सामने है," बौस ने कहा,—"लिखने की कला को अधिक कारगर बनाने के लिए हमने आधुनिक पद्धति को अपनाया है। राडर, स्ट्रैप्टो माईसीन, आर्गन-एलेक्ट्रोनिक जैसे आविष्कारों के इस युग में आप प्रस्तर युग के तरीकों का इस्तेमाल नहीं कर सकते। उन दिनों तो एक ही व्यक्ति लेखक भी होता था, पुजारी भी होता था और ओझागिरी के भी बहुत से काम करता था। अपनी गुफा में बैठकर अकेले में शुरू से अन्त तक वह अपनी रचना को पूरा कर लेता था। हमने लिखने के काम को 'रेशन-लाइज' कर लिया है,—आधुनिकतम टैकनीक के आधार पर हमने एक ऐसी पद्धति अपनाई है कि जिसमें उत्पादन मशीनरी के सभी हिस्से सुसंगत और सुचारू रूप में काम करते हैं।

उत्पादन के परिमाणों को बढ़ाकर हम बराबर अधिक-से-अधिक पुस्तकों का निर्माण कर रहे हैं। लेकिन इस दिशा में फिल्म-कम्पनियाँ हमसे बहुत आगे बढ़ गई हैं।"

बौस ने सड़क के दूसरी ओर स्थित एक लम्बी, एक-एक मंजिला इमारतों की ओर गरदन से संकेत किया। खुली खिड़कियों में से मैंने देखा कि इमारत के बड़े कमरे को लकड़ी के तख्तों की दीवारें खड़ी करके अनेक भागों में बाँट दिया गया था।

"यह सिनेरियो-विभाग था। जिस तरह मोटर के पुर्जे अलग-अलग बनते हैं और बाद में उन्हें जोड़कर मोटर तैयार की जाती है, उसी तरह सिनेरियो,—फिल्म की मूल कथा,—लिखने के काम को भी अनेक टेकनीकल विभागों में

बाँट कर आधुनिकतम रूप दे दिया गया है। कुल मिलाकर ये टेकनीकल विभाग बिना किसी बाधा के काम करते हैं। इस तरीके से उत्पादन अत्यधिक बढ़ जाता है और इस कारखाने के जो लेखक बुनियादी पुर्जे हैं, वे अपनी पूरी ताकत से उत्पादन करते हैं। यह सही है कि इस तरह खराब रचनाओं की संख्या कुछ बढ़ गई हैं; लेकिन वह कुछ नहीं। सब से महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इस तरह हमने उत्पादन में वृद्धि करने में सफलता प्राप्त की है। किताबों के बाजार में अब किताबों का अकाल नहीं रहेगा।"

पास वाले कमरे से दो आदमियों ने प्रवेश किया। एक क्षण के लिए मेरी दृष्टि फिर उनके चेहरों की ओर गई और मुझे फिर अपनी नज़र पर धोखा होने का शक हुआ। मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन था कि ऐसा भी हो सकता है।

उन्होंने बौस के हाथ में टाइप किये हुए कुछ कागज थमा दिये। बौस ने उन्हें सरसरी नजर से देखकर वापिस कर दिया।

"बिल्कुल नीरस!" बौस ने निर्णय दिया,—"दसवीं पंक्ति तक पहुँचते-पहुँचते पाठक को नींद आने लगेगी। घटनाएँ घिसी-पिटी और बेजान हैं। कोई नवीनता नहीं। जम कर गहरे कौतुक की रचना करो,—ठीक वैसे ही जैसे हिचकौक करता है। 'हूहैनिट' न होकर यह तो बच्चों को सुलाने वाली कहानी बन गई है। इसका अन्त चुस्त होना चाहिए,—एक दम चुस्त !"

"यह 'हूहैनिट' क्या चीज है?" लेखक के चले जाने के बाद मैंने पूछा।

"अर-र · अरे, यह एक टेकनीकल शब्द है" बौस की इच्छा स्पष्ट ही अपने किसी भी व्यापारिक भेद को प्रकट करने की नहीं थी,—"हाँ तो मैं कह क्या रहा था···हाँ, याद आया, "तुम लोग अभी तक बाबा आदम के युग में फँसे हो। हमारा तरीका तुमसे भिन्न है। यह हमारी अपनी, खास अमरीका की, ईजाद है। तुम भी जब हमारे जितने गल्प-मैगजीन और जेबी किताबें बाजार में फेंकना शुरू करोगे तो पुराने तरीके साथ नहीं देंगे।"

"लेकिन तुम्हारे यहाँ भी ऐसे लेखक काफी होंगे जो अपने घर पर बैठ

कर साहित्य की रचना करते हैं ?" मैंने पूछा ।

"हाँ," बौस ने जवाब दिया,—"हमारे यहाँ भी पाण्डुलिपियों के उत्पादन में बाबा आदम के युग की पद्धति से काम लेना अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हो सका है । लेकिन जैसे-जैसे लेखकों की रचनाओं की माँग बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे लेखक भी अपने दफ्तर रखने लगे हैं । इनमें अनेक छोटे लेखक काम करते हैं । यह ठीक दिशा में शुरुआत है । बड़ी फिल्म-कम्पनियों के सिनेरियो-विभागों ने इस दिशा में बहुत काम किया है ।"

मैंने बौस से अनुरोध किया कि इन दफ्तरों के बारे में कुछ और बतायें । बौस ने जवाब दिया कि किसी का भेद खोलना अच्छा नहीं होता । वे लेखक जो इस तरह के दफ्तर रखते हैं, इसे छिपाने की कोशिश करते हैं । उन्हें शायद इसे प्रकट करने में संकोच मालूम होता है । लेकिन यह लज्जा की नहीं, गर्व की बात है कि हम लेखन-कला को भी आज के युग के मुताबिक आधुनिकतम साँचे में ढाल रहे हैं । अमरीका को इस बात पर गर्व है कि उसने इस दिशा में आगे बढ़कर एक मिसाल पेश की है ।

उन जीवित अमरीकी लेखकों में जो अपने दफ्तरों को छिपाकर नहीं रखते, जोसेफ हिल्टन और एलेरी क्वीन हैं । हिल्टन कई साल तक विभिन्न पत्रों को प्रतिवर्ष बराबर पाँच लाख शब्द सप्लाई करता रहा और अन्त में खुद एक प्रकाशक बन गया । क्वीन का दफ्तर न्यूयार्क के पंच-एवेन्यू में है । फ्रेडरिक डैनी और मैनफ्रेड ली इस दफ्तर को चलाते हैं । इस दफ्तर से ही उन किताबों का 'उत्पादन' होता है जिन पर एलेरी क्वीन का नाम लिखा रहता है । एलेरी क्वीन के नाम से, जासूसी लेखिका के रूप में, अमरीका की समूची जनता परिचित है । इस दफ्तर से निकली एक किताब की दस लाख से अधिक प्रतियाँ बिकीं और डैनी तथा ली ने गर्टरूड पुरस्कार प्राप्त किया । हाल ही में इस दफ्तर ने बच्चों के लिए भी, एलेरी क्वीन का ट्रेडमार्क लगा-कर, किताबें निकालना शुरू किया है । इसी प्रकार रोबर्ट लारेन्स का दफ्तर भी अमरीका में प्रसिद्ध है । किताबों की दुनियाँ में यह आधुनिकतम चीज है जिसे अमरीका के लेखकों ने अपनाया है । इस तरह के बहुत से दफ्तर हैं,

लेकिन इन दफ्तरों के मालिकों की रजामन्दी के बिना उनके नामों का जिक्र करना 'ज्यादती' होगी।

इसी बीच बौस की युवती सैक्रेटरी ने मिलने के लिए आये लोगों की एक सूची पेश की और धीमे से कहा कि पहले मिस्टर वूलरिच मिलना चाहते हैं। वह अपने साथ दस हजार शब्दों की एक बहुत ही रोचक रचना लाये हैं जो वास्तव में 'हूहैनिट' है।

बौस की भलमनसाहत पर अधिक बोझ न पड़े, इसलिए मैंने चलने की इजाजत चाही।

"माफ कीजिएगा," बौस ने कहा,—"मैं विस्तार के साथ आपको कुछ नहीं बता सका। मेरी संक्षिप्त और सरसरी बातों से आपको सन्तोष तो न हुआ होगा, लेकिन फिर भी कुछ झाँकी तो मिल ही गई होगी। अमरीका की सांस्कृतिक गति-विधि में तुम्हारी दिलचस्पी सहज स्वाभाविक है। युद्ध ने दुनियाँ की संस्कृति को गहरा आघात पहुँचाया है,—एक तरह से उसे नष्ट कर दिया है। इसलिए, स्वभावतः अन्य औद्योगिक माल के साथ-साथ सांस्कृतिक 'माल' सप्लाई करने का बोझ भी अमरीका के ही कंधों पर आपड़ा है। कितना बड़ा काम है यह। एक-दो नहीं, सभी देशों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं को हमें पूरा करना है। इस काम को हमारा यह साहित्य और सांस्कृतिक केन्द्र ही पूरा कर सकता है। इसने 'घरेलू पाठकों' को जीतने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

"अमरीकी पाठकों को जीतने में जिन तरीकों और उत्पादन-पद्धतियों का इस्तेमाल किया गया है, उन सब का अब दूसरे देशों के पाठकों को जीतने में भी प्रयोग किया जा रहा है। जिस प्रकार सिनेमा ने साहित्य को अमरीका में जन-प्रिय बनाया उसी प्रकार वह अब दुनियाँ-व्यापी पैमाने पर साहित्य को सर्वप्रिय बना रहा है। पाठकों को विजय करने की इस मुहीम में सिनेमा अग्रिम दस्ते का काम देगा। सभी देशों में अमरीकी फिल्मों का वितरण और उनका स्थानिक प्रदर्शन करने वाली संस्थाएँ काम कर रही हैं। ये संस्थाएँ उन देशों में विशेष रूप से सक्रिय हैं जहाँ अमरीकी सेनाएँ भी अपना पड़ाव डाले हुए हैं,—जैसे एथेन्स में, रंगून में, पटागोनिया में, शंघाई में……!"

शंघाई का नाम सुनकर मुझे एक बात याद आ गई ? मैंने बीच में ही टोककर कहा,—"ताईहुआ से शुरू करके शंघाई में जितने भी अमरीकी सिनेमा हैं, वे सब टारजन की उछलकूद और चोर-डाकुओं तथा नकाबपोशों की मारकाट के फिल्म दिखाते हैं। दक्षिणी कोरिया और जापान में 'भुतहा घर' और 'प्रेत तथा श्रीमती' जैसे डरावने फिल्मों का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें एक विधवा स्त्री की कहानी है जो एक प्रेत से प्रेम करती है और अन्त में उसके आलिंगन में फँस कर रह जाती है। एक और फिल्म वहाँ दिखाया जाता है जिसका नाम है 'स्त्रियाँ जब खाली होती हैं।' इस फिल्म में एक औरत अपनी दो पागल बहनों के साथ रहती है और अन्त में पागल हो जाती है। वह अपनी मकान-मालकिन की हत्या भी करती है। मैट्रो का बनाया हुआ एक और फिल्म है जिसका नाम 'गैसलाइट' है। इसमें एक ऐसे पति की कहानी है जो अपनी पत्नी की चाची की हत्या करता है और अपनी पत्नी की मन-स्थिति को पागलपन की हद तक पहुँचा देता है। यह इसलिए कि वह उसके हारों पर कब्जा करना चाहता है। एक अन्य फिल्म है जिसका नाम है 'गुलाबी प्रेत'। इसमें एक आदमी है जो, एक के बाद एक, कई लड़कियों की हत्या करता है। इसी तरह एक दूसरे फिल्म में अपनी प्रेमिकाओं की हत्या करने वाले कलाकार की कहानी चित्र-बद्ध की गई है। बीसवीं सदी कम्पनी के एक फिल्म 'किरायेदार' में भी इसी प्रकार हत्याओं का बाज़ार गर्म है और ....."

बॉस की भौहों में बल पड़ते जा रहा रहे थे।

"फिल्मी कथानकों को लेकर इस तरह टाँग खींचने से कोई लाभ नहीं। एशियाई जनता की रुचि और जीवन के अनुसार हमें चल-चित्र दिखाने होते हैं। हम अपनी 'रुचि' उन पर नहीं लादते, न ही हम उन्हें किसी 'वाद' के प्रचार का शिकार बनाना चाहते हैं। हमारा काम तो, जैसा जनरल मैकार्थर ने कहा था, 'देशी लोगों में जनतंत्र की भावनाओं का प्रसार करना है', और खतरनाक विचारों और प्रेरणाओं से उनके दिल व दिमाग को दूर रखना है। इन देशों में हम अन्य फिल्म भी भेजते, जैसे कोलम्बिया कृत 'बहुत दिन पहले

की बात ।' इस फिल्म में एक ऐसे आदमी की कहानी है जो तितली बन जाता है, या फिर एक दूसरा फिल्म जिसका नायक अपने को शैतान के हाथों बेच देता है। इस फिल्म का नाम है 'धन क्या नहीं खरीद सकता ।' लेकिन स्थानिक सिनेमाओं ने इसका नाम बदल कर 'शैतान की दौलत' रख दिया।"

"नाम का यह परिवर्तन काफी सार्थक मालूम होता है ?" मैंने कहा।

"नाम तो नाम ही होते हैं। उनमें अर्थ खोजना गलत है। महत्व की बात यह है कि हमारे फिल्म हमारी संस्कृति के अग्रदूत हैं। उन्हें देखकर दूसरे देशों में हमारे लेखकों की पुस्तकें पढ़ने के प्रति रुचि उत्पन्न होगी। यह फिल्मों का ही नतीजा है जो विदेशों में हमारी किताबों की खपत बराबर बढ़ रही है। हमारी फिल्म-कम्पनियाँ बीस भाषाओं में फिल्म बनाती हैं। इसी तरह हम भी सभी भाषाओं में किताबें निकालने जा रहे हैं।

"विदेशों में हमारी संस्कृतिक मुहिम का नेतृत्व," बौस ने कहा,—"स्टेट डिपार्टमेण्ट के हाथ में है और हमारे यहाँ के करोड़पति अपनी पूँजी लगाकर उसे कार्यान्वित करते हैं। युद्ध के खत्म होते ही हमने अपने विशेषज्ञों के प्रतिनिधि-मंडल इन देशों में भेजने शुरू कर दिये। जापान में जो कमीशन गया, वह विशेष रूप से सफल सिद्ध हुआ है।"

"जापान वाले प्रतिनिधि-मण्डल का मुखिया कौन था ?" मैंने पूछा।

"प्रोफेसर स्टीवेन्स। अमरीका का एक सुप्रसिद्ध विद्वान्।"

"वह किस यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर है ?"

"यूनिवर्सिटी में नहीं, वह राकफैलर की फर्म में काम करता है ?" बौस ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कहा,—"प्रोफेसर, बड़े-बड़े वैज्ञानिक और लेखक, इस शुभ काम में हमें सभी का सहयोग प्राप्त है। विदेशों में स्थित हमारी सेनाओं के जितने भी हैडक्वार्टर हैं, स्थानिक लोगों में काम करने के लिए उन सबके साथ सी-आई-एण्ड-ई विभाग नत्थी है। इन विभागों की पुस्तकालय-यूनिटें हमारे साहित्य के प्रचार और प्रसार का काम देखती हैं।"

"लेकिन इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है कि 'सूचना और शिक्षा',

का यह काम सैनिक खुफिया विभाग के सेक्शन जी-टू का अंग बना दिया गया है ?"

"विभाग विशेष का नाम लेकर इस तरह बाल की खाल क्यों निकलते हो। यह क्या गर्व की बात नहीं है कि हमारा खुफिया विभाग इतना योग्य है कि वह साहित्यिक काम भी कर सकता है। निन्दा न करके तुम्हें हमारी काम करने की क्षमता की प्रशंशा करनी चाहिए।"

मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बौस ने उसे दबाया और मेरे कंधे को थपथपाते हुए कहा,—"यह याद रखो कि अमरीका में साहित्य-रचना ने जो इतना व्यापक रूप धारण कर लिया है, इसका कारण यह है कि हम अपनी जनता की रुचि के मालिक, उनके पोषक और निर्देशक हैं। विश्व-संस्कृति का मोर्चा आज अमरीका के हाथ में है। इस मोर्चे को जीतने के लिए हमारे देश के बड़े-बड़े उद्योगपति मारगन, राकफ़ेलर और मैलन, गूगानहाइम, ड्यूपौं बाण्डरबिल्ट, रोजेनवाल्ड, कार्नेगी, हैरीमैन और दूसरे भरपूर मदद दे रहे हैं।"

बौस की युवती-सेक्रेटरी ने इसी समय फिर प्रवेश किया और कहा "स्टीवेन्स बात करना चाहते हैं।" बौस ने मेरी ओर भेद-भरी दृष्टि से देखते हुए सफेद टेलीफोन उठाया। बौस की दृष्टि का अर्थ समझ कर मैं वहाँ से उठकर बाहर चला आया।

[८]

बौस के आफिस से निकल कर मैंने एक ड्रग-स्टोर में प्रवेश किया, गला तर करने के लिए टमाटर, गाजर और गोभी के रसों का घोल, जिसमें मिर्च भी पड़ी थी, पिया। यह ड्रग-टोर इस तरह की न जाने कितनी प्रकार के घोल बनाकर बेचता था। एक ग्राहक ने कैस्टर आयल के घोल की माँग की। दुकानदार ने जोरों से हिलाकर एक लम्बे से गिलास में घोल तैयार किया और ग्राहक को दे दिया। मेरी ओर कनखियों से देखते हुए उसने गिलास खाली कर दिया और फिर जेब में से भुनी हुई मटर के दाने निकाल कर चबाने लगा।

"क्या यह जगह खाली है ?" सहसा मेरे पीछे से आवाज आई।

मैंने घूमकर देखा और देखकर स्तब्ध रह गया।

काँच लगे दरवाजे वाले कमरे में जिन लोगों को देखा था, उनमें से एक मेरे सामने खड़ा था। इस बार मुझे अपनी आँखों पर विश्वास करना पड़ा। अब मेरे चकित होने का कारण उसकी आकृति नहीं, बल्कि यह था कि ड्रग-स्टोर में जितने भी लोग थे, उनमें से अन्य किसी को उसकी आकृति में कुछ भी अजब या असाधारण नहीं दिखाई दिया था। बिना किसी उत्साह या गर्मी के एक बार गरदन झुकाकर वह मेरे पास वाली दूसरी कुर्सी पर बैठ गया और लेमन सोडा के लिए उसने आर्डर दिया।

पास ही एक अखबार वाले की दुकान से मैं कितनी ही पत्र-पत्रिकाएँ खरीद लाया था। मैंने उनके पन्ने पलटना शुरू कर दिया।

मुझे लगा कि असाधारण चेहरे वाला यह व्यक्ति मेरी ओर देख रहा था। निकट से देखने पर उसका चेहरा और भी अजब लग रहा था। उसे देख कर पेन्सिल से खींचे हुए एक ऐसे चेहरे की याद हो आई जिसकी रेखाओं को रबड़ से धुँधला कर दिया गया था। अधिक सही बात तो यही थी कि चेहरा नाम की चीज उसके पास थी ही नहीं। मुँह की धुँधली बाह्य-रेखाओं के सिवाय और कुछ न था, जिससे उसके चेहरे का, उसकी आकृति और व्यक्तित्व का, कुछ आभास मिलता।

इस अजनबी व्यक्ति ने अपनी जेब से एक चपटी बोतल निकाली और उसे सामने रखे गिलास में उंडेल लिया। इस घरेलू घोल का लम्बे घूँट पीने के बाद वह कुछ चेतन हुआ और उसने बातें शुरू कर दीं। उसने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ का रहने वाला हूँ। मैंने बता दिया कि मैं कहाँ का रहने वाला हूँ और मेरी इस यात्रा का उद्देश्य क्या है। मेरी बात सुनकर उसने मुँह बिचका लिया।

"तुम्हारे देश के बारे में मैंने अनेक किताबें पढ़ी हैं और अब तक कोई अच्छी राय मैं नहीं बना सका हूँ। मैं समझता हूँ, तुम्हें यहाँ परेशान करने वाली चीजों से काफी वास्ता पड़ा होगा। क्यों, ठीक है न ?"

उसके बोलने के इस ढंग और व्यंग भरे अन्दाज ने मुझे कुछ चौंका-सा दिया।

"असली साहित्य का," उसने कहा,—"राजनीति से कोई वास्ता नहीं होता। साहित्य को राजनीति से पूर्णतया अलग, तटस्थ, रहना चाहिए।"

"तटस्थता की भी अपनी राजनीति होती है," मैंने कहा,—"जैसे युद्ध के दौरान में फ्रैन्को तटस्थ रहा था।"

"राजनीतिक बातों में तुम से लोहा लेना कठिन है," उसने कहा,—"लेकिन चूँकि तुम लेखक हो, इसलिए मैं समझता हूँ कि तुम्हारा उससे सीधा सम्बन्ध नहीं हो सकता। जो भी हो, एक-दूसरे से परिचित होना बुरा न होगा।"

मैंने अपना नाम बता दिया। उसने भी अपने विचित्र चेहरे और बोलने के विचित्र ढंग के साथ बुड़बुड़ा कर कहा,—"मेरा नाम है पी. एच. पी।"

मुझे लगा कि जैसे मेरे सुनने में कोई कसर रह गई, या यह नाम ही कुछ अजीब था। जो हो, मैंने इस सम्बन्ध में और कुछ नहीं पूछा।

"क्या तुम लेखक हो ?" मैंने सवाल किया, —"और कितने दिनों से तुम इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हो ?"

"एक उपन्यास और ढेर सारी कहानियाँ मैंने लिखी है," गिलास में से एक लम्बा घूँट भरते और अपने चेहरे की धुँधली आकृति पर हाथ फेरते हुए उसने कहा। मुझे लगा जैसे उसके मुँह से एक हल्का-सा निश्वास निकल कर वातावरण में विलीन हो गया।

पत्र-पत्रिकाओं को उलट-पलट कर देखने के बाद मैं अनायास ही हँस दिया।

"हँसी के आवरण में तुम अपनी ईर्ष्या को छिपाना चाहते हो," उसने कहा,—"तुम्हारे देश में इस तरह के पत्र श्यायद देखने को भी नहीं मिलते होंगे।'

"बिल्कुल ठीक कहते हो तुम," मैंने कहा,—"हमारे यहाँ इस तरह

की पत्र-पत्रिकाएँ नहीं हैं जिनमें रोंगटे खड़े करने वाली हत्याओं और हर प्रकार की लाशों की प्रदर्शनी सजाई जाती है,—टुकड़े की हुई लाशें, कुचली और चिथड़ी हुई लाशें, डूबी हुई लाशें, कबाब की तरह भुनी हुई लाशें, सफेद कपड़ों में लपेट कर बाकायदा पैक की हुई लाशें, और लाशों के इन पारसलों को ले जाने वाले हवाई जहाज,—नहीं, हमारी पत्र-पत्रिकाओं में यह सब नहीं होता। हमारे पत्र ग्रिसवेल जैसे भविष्य की बातें बताने वाले नजूमी को नहीं उछालते जिसको युद्ध का अन्त होने की तिथि की भविष्य-वाणी कहने का श्रेय प्राप्त हो। न ही हमारे पत्र इस तरह के लेख छापते हैं जैसे कि कैलीफोर्निया की वेधशाला के डाइरेक्टर ने लिखे थे। इन लेखों में यह रहस्य उद्घाटित किया गया था कि अणुबम विस्फोट के असर ने सौर-मण्डल को भी अछूता नहीं छोड़ा। न ही हमारे पत्र ब्रिटेन के उस कुत्ते की कहानी छाप कर अपने पाठकों का दिल बहलाते हैं जिसने २८·२ सेकण्ड में ५५० गज की दौड़ लगाई। अस्सी बरस के एक बूढ़े की ७६ बरस की एक अमीर बुढ़िया से शादी और यह कि कोनी द्वीप में किस प्रकार उन्होंने 'हनीमून' मनाया,—या फिर टैक्सा के उस आदमी की कहानी जो शर्त बद कर ७५ गिरगट निगल गया,—या यह कि अमुक फिल्म अभिनेता की अमुक अभिनेत्री साठवीं प्रेमिका है, —या यह कि वरमौण्ट में पिछले महीने एक सौ बीस बिल्लियों ने आत्महत्या की,—या यह कि अमुक व्यक्ति चुम्बन के तीन हजार प्रकारों की दीक्षा देता है,—हमारे पत्रों में यह सब नहीं होता। बन्दरों को अगर किसी तरह पढ़ना सिखाया जा सके तो सम्भव है कि वे यह सब पढ़ना पसन्द करें, लेकिन······"

पी. एच पी मन-ही-मन मुसकरा दिया।

"तो तुम्हें न हत्याओं की कहानियाँ अच्छी लगती हैं, न चुम्बन के तीन हजार प्रकारों में तुम्हारी दिलचस्पी है। अपनी-अपनी रुचि ही तो है। लेकिन इतने ऊँचे सिंहासन पर बैठकर बन्दरों का मूल्यांकन करना ठीक नहीं। उन्हें पढ़ना सिखाया जाय तो क्या यह बुरा होगा? नहीं, बल्कि यह अच्छा होगा,—जेबी किताबों की खपत बढ़ जायगी, खपत बढ़ेगी तो हमारी आमदनी भी बढ़ेगी। मैं तो उन्हें बड़ी आशा भरी नजर से देखता हूँ। हमें बन्दरों को

भी पढ़ना सिखाना है, उनके लिए साहित्य तैयार करना है ...''

"मैं जानता हूँ कि तुम किस तरह और क्या पढ़ना सिखाते हो," मैंने कहा,—"अमरीकी सैनिकों के साथ-साथ अमरीकी फिल्मों और तुम्हारी जेबी किताबों ने भी जापान में प्रवेश किया। इसके एक साल के भीतर ही टोकियो-पुलिस ने सूचना प्रकाशित की कि जापान में डकैतियों की संख्या तीस गुना बढ़ गई है। पुलिस चीफ ने बताया कि यह जासूसी उपन्यासों और फिल्मों का नतीजा है।"

पी-एच. पी. के होठों में बल पड़ गये।

"तुम्हें देखकर मुझे कहानी की एक राजकुमारी की याद हो आई है। वह इतनी कमीनी थी कि जब बोलती थी तो उसके मुँह से मेंढक झड़ते थे। हर बात की आलोचना करना तुम्हारी आदत में शामिल हो गया है।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है," मैंने कहा,—"जेबी किताबों की योजना की मैं निन्दा नहीं करता। यह एक अच्छी योजना है। लेकिन दुकानों पर अधिकांश किताबें जासूसी की ही दिखाई देती हैं। तुम्हारे बौस का कहना है कि जासूसी किताबें इसलिए छापी जाती हैं कि उनका असर शिक्षाप्रद होता है, दिमाग को वे तेज बनाती हैं......"

"दिमाग को तेज बनाती हैं,"—यह सुनकर पी. एच. पी को आश्चर्य हुआ। अपने मुँह को उसने हाथों से ढक लिया और उसके कंधे हिल उठे। लगता था जैसे उसे हँसी आ रही हो। धीरे-धीरे उसकी हँसी की आवाज कुछ ऐसा रूप धारण करती गई जो रोने की आवाज जैसी मालूम होती थी। अन्त में अपनी मुट्ठी को मेज पर पटकते हुए उसने तेज स्वर में कहा, —"हर बात की एक हद होती है !"

उसने अपना रूमाल निकाला, नाक पोंछी और फिर शान्त तथा स्थिर आवाज में कहा,—"जहन्नुम में जाय यह बौस और इसकी बातें !"

पी. एच. पी. ने अब अपने बौस के बारे में बताना शुरू किया।

"बौस खुद कई साल तक विभिन्न पत्रों में लेख और टिप्पणियाँ लिखता रहा है। कुछ लेखों में वह डैमोक्रैटों की खबर लेता था और रिपब्लि-

कनों की तारीफ करता था और कुछ में रिपब्लिकनों की बखिया उधेड़ता था और डेमोक्रेटों को आसमान पर चढ़ाता था। उसकी खास विशेषता यह थी कि वह राजनीतिज्ञों, लेखकों, अभिनेताओं आदि के जीवन के गुप्त रहस्यों को अपने लेखों में खोलता था। इस तरह के लेखकों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वे जो पोल खोलने के लिए ही पोल खोलते हैं और दूसरे वे जिनके सामने कोई अच्छा उद्देश्य होता है। बौस दोनों ही तरीकों का इस्तेमाल करता था। कुछ पत्रों में वह अच्छे उद्देश्य से पोल खोलता था, कुछ में बुरे उद्देश्य से,—एक पत्र में किसी लेखक की उसने इसलिए प्रशंसा की कि तीस वर्ष तक वह अपने घर की दासी को, वेतन के अलावा, दस डालर प्रति सप्ताह अलग से देता रहा। दूसरे पत्र में इसी लेखक के बारे में, उसे नीचे गिराने के लिए, उसने लिखा कि वह निहायत पतित है, घर की दासी से उसका बुरा सम्बन्ध है।

इस तरह के लेखक 'कालमिस्ट' कहलाते हैं। अखबारों के कालम लिखना अमरीका में बहुत जनप्रिय है। बहुत से लोग अपना लेखक-जीवन इससे शुरू करते हैं। रिंग लाडनर और विल राजर्स पहले कालम-लेखक ही थे। वाल्टर लिपमैन ने भी इसी प्रकार ख्याति प्राप्त की। आजकल वह केवल एक सिद्धान्त का प्रचार करता है,—अमरीका ही दुनियाँ का ध्रुवतारा है। सभ्यता की रक्षा के लिए लाल खतरे को खत्म करो।

बौस ने अपने लिए दूसरा रास्ता चुना। वह साहित्यिक कृतियों का आलोचक बन गया। धीरे-धीरे वह एक बहुत बड़े बुक-क्लब के जजों की कमेटी में पहुंच गया और आजकल जेबी-किताबों के उद्योग में साझीदार का स्थान रखता है। युद्ध के बाद, स्टेट-विभाग के आदेश से, विभिन्न देशों में प्रकाशित होने वाले मैगजीनों के लिए वह नियमित रूप से लेख लिख रहा है। उसके लेखों का विषय होता है,—'दुनियाँ के साहित्य और संस्कृति को अमरीका की देन।' आज के युग को वह अमरीकी संस्कृति का युग कहता है।

ऐसा है हमारा यह बौस," अन्त में पी. एच. पी. ने कहा,—"लेकिन छोड़ो उसे। चलो, जरा घूमने चलें।"

[६]

पास ही, अगली सड़क पर एक सिनेमा था। हम दोनों वहाँ पहुँच गए। सिनेमा-घर का आधा अग्र-भाग बड़े-बड़े पोस्टरों से ढका हुआ था। एक बहुत बड़े पोस्टर में पायजामा पहने एक मुस्कराती हुई युवती बनी थी। युवती के पृष्ठ भाग में एक बहुत बड़ा शराब पीने का प्याला और एक ऐसे चेहरे का छाया-चित्र बना था जिसका गला छुरे से बिंधा था, आँखें भय से निकली हुई थीं, पुतलियों में घड़ी की सुइयाँ चमक रही थीं और सुइयों के अगल-बगल से दो शैतानी हाथ जीवन और आशा को मसल डालने के लिए आगे बढ़ते हुए दिखाई देते थे। यह पोस्टर अति-वास्तववादी चित्रकार साल्वाडोर डाली की शैली पर बना था। यह चित्रकार आजकल अमरीका में विशेष रूप से प्रसिद्ध है। उसके एक चित्र की अमरीकी पत्रों ने बहुत चर्चा की थी। इस चित्र का नाम है, "उबली हुई हड्डियों की नरम बनावट।"

टार्च लिए हुए एक लड़की ने हमें अपनी सीटपर ले जाकर बैठा दिया। हाल में अन्धेरा था और संवाद-चित्र (न्यूज-रील) दिखाये जा रहे थे, युद्ध के बाद की दुनियाँ के संवाद-चित्र। बी. एस. नाम के बम-मार हवाई जहाजों की उड़ान दिखाई गई। यह बम-मार दूर स्थित देशों में बम गिरा सकते हैं। लम्बी उड़ान इनकी विशेषता है। एक दृश्य में कैनाडा में एक साथ पैदा होने वाले पाँच बच्चे दिखाए गये। फिर अमरीकी सेना के लिए बनाये गए आधुनिकतम अस्त्रों का प्रदर्शन हुआ। प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन का सुबह का घूमना दिखाया गया। बर्फीले देश में बिना बाधा के चलने वाली कारों और फिर सधे हुए बन-मानुषों की कसरत के दृश्य दिखाए गये। मैकार्थर को टोकियो में भाषण करते हुए दिखाया गया कि मानव-जाति अब युद्ध के लिए कभी तैयार न होगी। राडर की मदद से अमरीकी सेना के चाँद से सम्पर्क स्थापित करने और संगीत-द्वारा दिमागी रोगों को दूर करने की नयी पद्धति के नमूने दिखाये गये।

युद्ध के बाद की दुनियाँ के इन चित्रों को देखना, देखते रहना, मेरे लिए

कठिन हो गया। बाहर जाने के लिए मैं उठ खड़ा हुआ। मगर पी. एच. पी. ने मुझे हाथ पकड़ कर बैठा लिया। कहा,—"बीच में से उठ कर जाना ठीक नहीं।"

मेरी सिगरेट खत्म हो गई थी। पी. एच. पी. ने यह देखा और मुँह में डालने के लिए मीठे गोंद की एक टिकिया मुझे दे-दी। मैंने उसे मुँह में डाल लिया। पहले तो यह मीठी-मीठी और ठंडी लगी, फिर उसकी मिठास गायब हो गई, लेकिन मैं उसे फिर भी चबाता रहा। दाँतों और जबाड़े की कसरत करते हुए मैं फिर पर्दे की ओर ताकने लगा।

संवाद-चित्रों के बाद दूसरे चित्रों का सिलसिला शुरू हुआ। मुझसे नहीं रहा गया। तीसरे चित्र के शुरू होते-न-होते मैं उठकर तेजी के साथ बाहर निकल आया। पी. एच. पी. ने भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। बाहर निकल कर उसने मुझे पकड़ लिया। बोला,—"कैसा लगा ?"

उत्तर देने से पहले गोंद की बेज़ायका और बेसुगन्ध और कभी न शेष होने वाली टिकिया को थूक कर मैंने मुँह खाली किया, माथे और कनपटी का पसीना पोंछा, हल्की मुसकराहट चेहरे पर लिए पी. एच. पी. ठीक उसी प्रकार मेरा अध्ययन कर रहा था जिस तरह, अणु-बम के विस्फोट के बाद, अणु-बम के असर की जाँच करने के लिए बिकनी से लाये गए गिनीपिग्स का विशेषज्ञों ने अध्ययन किया था।

फिल्म शुरू होने से पहले मेरे होश-हवास दुरुस्त थे, लेकिन फिल्म शुरू होने के कुछ ही देर बाद गायब होने लगे थे। फिल्म का नाम था, "सन्देह का प्रेत"। इसका कथानक, खेल की किताब के ही शब्दों में, यह था—

कैलीफोर्निया में सान्ता रोज़ा नामक एक छोटी-सी जगह है। वहाँ न्यूटन का सुखी परिवार रहता था। इस परिवार में चार्ली नामक एक सुन्दर लड़की थी। चार्ली के चचा बाहर से आते हैं और न्यूटन-परिवार में खुशी दौड़ जाती है। कुछ दिन बाद मध्यवर्गीय घरों की जाँच करने वाली एक कमेटी के सदस्य न्यूटन-परिवार में भी जाँच करने के लिए आते हैं। चार्ली के चचा तुरन्त ताड़ जाते हैं कि ये लोग असल में खुफिया विभाग के आदमी हैं। वे

चचा का फोटो लेने में असफल हो जाते हैं, चचा उनके कैमरे को छीन लेते हैं। चचा का यह व्यवहार लड़की चार्ली को अजीब नहीं लगता। खुफिया विभाग वाले उसके कान में बताते हैं कि उसका चचा हत्या के अपराध का अपराधी है। उसे पुलिस की मदद करनी चाहिए।

चार्ली पहले तो इसके लिए तैयार नहीं होती, लेकिन तैयार न होने पर भी सन्देह का बीज उसके हृदय में घर कर जाता है और अपने चचा की हर हरकत को वह अर्थपूर्ण दृष्टि से देखने लगती है। वातावरण सन्देह से भर जाता है, भरता जाता है। चचा ने रद्दी अखबार का एक टुकड़ा फाड़कर फेंक दिया था। चार्ली वह फटा हुआ अखबार उठा लेती है और जानना चाहती है कि जो अंश फट कर अलग हो गया है, उसमें क्या था। लाइब्रेरी में जाकर वह उस अखबार को निकलवाती है। फटे हुए अंश में एक विधवा स्त्री की हत्या और हत्यारे के गायब हो जाने का समाचार छपा था। चार्ली को बाद में यह भी मालूम होता है कि उसके चचा से जो अँगूठी उसे दी थी, उस पर जिस नाम के प्रथम अक्षर खुदे हुए हैं, वे मृत विधवा के नाम से मिलते-जुलते हैं। सन्देह के साथ-साथ चार्ली के हृदय में अब आतंक भी प्रवेश करता है और वह डरने लगती है कि अगर चचा गिरफ्तार हो गये तो परिवार का नाम और प्रतिष्ठा धूल में मिल जायगी। संकेत से वह अपने चचा को बताती है कि उसे सब कुछ मालूम है और चचा को अब यहाँ से विदा हो जाना चाहिए।

इसके बाद कौतुक और उत्सुकता में वृद्धि होती है। सन्देह और आतंक गहरे होते जाते हैं। चचा जाने के बजाय अपनी भतीजी का गला घोंट कर मार डालना चाहते हैं, लेकिन सफल नहीं हो पाते। अन्त में चचा घोषित करता है कि वह चला जायगा। चार्ली उसे विदा करने के लिए स्टेशन तक जाती है। जब गाड़ी चलती है तो चचा उसे पकड़ लेता है और चलती गाड़ी के नीचे फेंक देने की कोशिश करता है। चचा की आँखें खूनी हो उठती हैं और युवती की आँखें हत्या के आतंक और विभीषिका से फटी-की-फटी रह जाती हैं। सहसा चचा का पाँव फिसल जाता है, लड़की पर

उसकी गिरफ्त कुछ शिथिल पड़ती है और चचा की हड्डियाँ गाड़ी के पहियों के नीचे कुचल कर मलीदा बन जाती हैं। फिल्म का अन्त मातमी दृश्य के साथ होता है। एक शव पेटिका रखी है, उसके पास लड़की और जासूस खड़े हैं। दुर्घटना का शिकार होने वाले चचा की मृत्यु के रहस्य को सिवाय उसके और कोई नहीं जानता। लड़की का, चार्ली का, चेहरा फिर बड़ा करके दिखाया जाता है,—यह इसलिए कि उसने परिवार को बदनाम होने से बचा लिया और चचा भी दुर्घटना के कारण बदनाम होने से बच गया !'

इसके बाद अगले फिल्म के शुरू होने के पहले तक मेरे होश-हवास संदेह और आतंक के प्रेत की भेंट चढ़ चुके थे। बस, फटी हुई आँखों से मैं देख रहा था। शरीर निष्क्रिय हो गया था, चेतना निष्क्रिय हो गई थी। दम-घोट वातावरण और दम-घोट घटनाएँ थीं। एक पति है जो अपनी पत्नी से तंग आ चुका है और उससे छुटकारा पाना चाहता है। एक अन्य व्यक्ति रंगमंच पर आता है जो प्रेमी महोदया से तंग आ चुका है और उससे छुटकारा पाना चाहता है। छुटकारा पाने का फिर वही एक पेटेण्ट तरीका सामने आता है। वह तरीका है हत्या। कोई एक आगे बढ़कर किसी दूसरे की हत्या करता है। फिर कोई एक किसी का पीछा करता है और उसके इतना निकट पहुँच जाता है कि बस उसे पकड़ ही लेगा। फिर गोली छूटती है, लेकिन निशाना चूक जाता है।

सन्देह और आतंक, आतंक और संदेह,—हृदय काँप उठता है, दिमाग काम करने से इन्कार कर देता है और ठीक उस समय जब पर्दे पर हत्या का भयंकरतम दृश्य दिखाई पड़ता है, दर्शकों में से कोई युवती चीख उठती है,—आतंक और आह्लाद के आवेश में चीख उठती है। फिर संतोष की साँस लेती है,—गनीमत है कि यह सब उस पर नहीं बीत रहा है।

फिल्म के प्रभाव से छुटकारा पाने के लिए मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं और कुर्सी की पीठ का सहारा लेकर अपने बदन को ढीला छोड़ दिया।

"बस इतने से ही घबरा गये !" पी. एच. पी. ने कहा,—"बात यह

है कि अभी तुम नये हो। कुछ दिन बाद जरा अभ्यस्त हो जाने पर इन फिल्मों को देखने का तुम्हें भी चस्का पड़ जायगा और नवीनतम 'हिट' को देखने के लिए तुम उतावले हो उठोगे।"

पी. एच. पी. को मैंने संकेत से समझाना चाहा कि अपनी इन बातों से मुझे मुक्ति दे। मेरा जी पहले ही घबरा रहा है।

वह हँस दिया। फिर कुछ खीझसी उतारते हुए बोला :

"तुम मास्को की मुर्गी हो।" पी. एच. पी. ने कहा,—"इतनी नरम चमड़ी लेकर तुम हम लोगों से क्या मुकाबला करोगे? अमरीका में प्रति सप्ताह दस करोड़ आदमी सिनेमा देखते हैं। मानना पड़ेगा कि एंग्लो-सैक्सन जाति तुम लोगों से अधिक मजबूत और कड़े दिल की है।"

"जहन्नुम में जाएँ तुम्हारी ये फिल्म," मैंने झुँझला कर कहा,—"फिल्मों से नहीं, मैं तुम्हारे साहित्य की दुनियाँ से परिचित होना चाहता हूँ।"

पी. एच. पी. मेरी बगल में आकर बैठ गया और उसने मुझे समझाना शुरू किया।

"देखो," उसने कहा,—"जहाँ तक अमरीकी जनता के लिए प्रकाशित होने वाले साहित्य की बात है, उसे सिनेमा से अलग करके नहीं देखा जा सकता। इन दोनों में अटूट गठबन्धन स्थापित हो गया है।"

"अरे हाँ, एकाएक याद आया," मैंने पूछा—"हूहैन्निट' तुम लोग किसे कहते हो?"

"तुम्हें मैं अभी सब बताता हूँ," उसने कहा—'अमरीका की साहित्यिक दुनियाँ में प्रचलित कुछ खास शब्दों में तुम्हारी दिलचस्पी पैदा हो गई है।" अच्छा तो सुनो।

"सबसे पहले तुम्हें 'स्टापर' शब्द का मतलब मालूम होना चाहिए। इस शब्द का प्रयोग सब से पहले "लुक" नामक सचित्र मैगजीन के सम्पादक ने अपनी एक पुस्तक में किया था। यह पुस्तक भारी संख्या में बिकी। इस सम्पादक ने १९४४ में न्ययार्क यनिवर्सिटी में फोटोग्राफिक चित्रों पर कई

भाषण दिये थे। इन भाषणों को ही इस पुस्तक में छापा गया था। इस पुस्तक में 'स्टापर' शब्द का प्रयोग ऐसे चित्रों के लिए किया गया था जो हृदय को चौंका कर स्तब्ध कर दें। उदाहरण के लिए,—टैंक से कुचले जाने से एक क्षण पूर्व एक सैनिक का चेहरा, पाँव बाँध कर फाँसी पर लटकाये गये आदमी की आँखें, जलती हुई गगनचुम्बी इमारत की खिड़की से कूदकर जान देने वाली स्त्री का चित्र जो अब हड्डी और मांस का लोथड़ा भर रह गई थी और इस लोथड़े के बीच उसका ऊँची एड़ी का जूता साफ़ दिखाई पड़ रहा था।

'स्टापर' उन चित्रों को कहते हैं जिनका असर हृदय की धड़कन को स्तब्ध कर देने वाला होता है,—जिन्हें देखकर ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे रह जाती हैं।

इस शब्द को बड़ी उत्सुकता और व्यग्रता के साथ, फिल्म वालों ने अपना लिया और फिल्मी दुनियाँ में इसका प्रयोग सबसे पहले मोनोग्राम फिल्म कम्पनी ने अपने 'आजाद' नामक फिल्म के लिए किया। आजकल वही किताब और फिल्म सबसे अच्छा माना जाता है जिसका प्रभाव 'स्टापर' श्रेणी का होता है।"

[१०]

"लेकिन यह तो बताओ," मैंने पी. एच. पी. को याद दिलाते हुए कहा,—"हूहैन्निट शब्द का प्रयोग तुम किस लिए करते हो ?"

"जरा ठहरो !" पी. एच. पी. ने कहा—"तुम नहीं जानते कि हम लेखकों की क्या गत बना डाली है इन शब्दों ने। पहले मैं पर-स्त्री-प्रेम के कथानकों पर कहानियाँ लिखता था। इस कला में मैं काफी दक्ष हो गया था। स्त्रियों को भगाना, छोटे-छोटे बच्चों को गायब कर देना और फिर उनके लिए भारी रकमों की माँग करना, धोखा-धड़ी और लूट-खसोट, मनोविज्ञान के नाम पर जायज-नाजायज सम्बन्धों का सीत्कार-फूत्कार,—सभी कुछ मैंने लिखा है और लिख सकता हूँ। लेकिन इन 'हूहैन्निटों' ने मेरी कमर तोड़ दी है। अब केवल हत्या से काम नहीं चलता, हत्या तो केवल रसों का उद्रेक करने का

आलम्बन-मात्र होती है,—उत्सुकता हो, आतंक हो और मन को हल्का करने के लिए हास्य भी हो। नाक में दम कर दिया है बौस ने। रोज नौकरी से अलग करने की धमकी देता है। 'हूहैन्निट' असल में एक पूरे वाक्य—हू हैज डन इट—का संक्षिप्त रूप है। दूसरे शब्दों में इसका मतलब है: 'हत्या किसने की।' इसका सबसे पहले 'अमरीकी पुस्तक समाचार' नामक मैगजीन में किसी आलोचक ने इस्तेमाल किया था। आज इस वाक्य का प्रयोग 'हूहैन्निट' के रूप में, फिल्मों और किताबों की आलोचनाओं के दौरान में टाइम, लिबर्टी, पिक आदि सभी पत्र करते हैं।

"युद्ध के बाद से हूहैन्निट श्रेणी के फिल्मों और किताबों का विशेष रूप से प्रचार और प्रसार बढ़ा है। इसके लिए बाकायदा कोशिशें की गई हैं। जनता के लिए जो आज साहित्य और फिल्म बड़े पैमाने पर बनाये जा रहे हैं वे...... .."

पी एच. पी. एकाएक उठ खड़ा हुआ और खजूर के पेड़ों के झुरमुट के बीच से दिखाई पड़ने वाली एक इमारत की ओर संकेत करते हुए बोला—'हजारों-लाखों की संख्या में बनने वाले फिल्मों और जेबी किताबों, रोंगटे खड़ी करने और हृदय की धड़कन को स्तब्ध कर देने वाली इन हूहैन्निट कृतियों को देखकर बरबस मन में सवाल उठता है,—हू हैज डन इट—यह सब किसने किया है,—कौन इसके लिए जिम्मेदार है,—किसने लाखों पाठकों की रुचि की हत्या की है, उनकी साहित्य और संस्कृति का गला घोंटा है......"

पी. एच. पी. की मुट्ठी बँध गई थी और उस इमारत को लक्ष्य करते हुए वेग के साथ वह कह रहा था—"तुमने,—हालीवुड,—तुमने यह सब किया है ?"

मैंने पी. ऐच. पी. की ओर देखा और मैं इतना चकित हो उठा कि मेरे मुँह से चीख निकलते-निकलते रह गई। उसके चेहरे का, आकृति का, धँधलापन दूर हो गया था। उसकी आँखें, नाक, ठोड़ी, और गाल पर मौजूद चोट का चिन्ह,—सभी स्पष्ट होकर उभर आये थे। यह परिवर्तन, वास्तव में, चकित कर देने वाला था।

पी. एच. पी. को और उसके जीवन के रहस्य को और भी अधिक निकट से देखने और जानने पहचानने का मैंने निश्चय किया।

"चलिए, कहीं चलकर एक साथ कुछ नाश्ता करें" मैंने कहा—"वहीं पर बातें भी होंगी।"

पी. एच. पी. ने अपनी घड़ी की ओर देखा और मेरे निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया।

"सिनेमा और साहित्य के बारे में मुझे और भी बहुत कुछ कहना है," उसने कहा—"आज के अमरीकी साहित्य को सिनेमा से अलग करके नहीं देखा जा सकता। एक समय था जब सिनेमा दरअसल साहित्य का अच्छा और उपयोगी साथी था। इसमें सन्देह नहीं कि उसने साहित्य के प्रचार और उसकी स्थिति को मजबूत बनाने में भी मदद की। लेकिन यह तब की बात है जब साहित्य ने भी, सिनेमा के साथ चलकर, जनता पर विजय प्राप्त करने के लिए आगे कदम बढ़ाया था। यहीं से इन दो शक्तिशाली माध्यमों में गठ-बन्धन स्थापित हुआ। उसके बाद सिनेमा ने अपने साथी लेखकों को अपने चंगुल में जकड़ना शुरू किया,—थैलियों के मुँह खुले और डालर दिमाग पर चढ़ कर बोलने लगा। सिनेमा ने साहित्य को अपने पंजे में दबा लिया।"

"सिनेमा और साहित्य के इस गठबन्धन का नतीजा," मैंने कहा—"कुछ वैसा ही हुआ जैसा कि अमरीका और ब्रिटेन के गठबन्धन का,—अम-रीका को सिनेमा समझो और ब्रिटेन को साहित्य,—एक दूसरे को अपने चंगुल में फँसाता जा रहा है।"

पी.एच.पी. मुँह बिचका कर रह गया।

"कला और साहित्य की बात करते समय," उसने कहा—"बुद्धिमानी इसमें है कि राजनीति को ताक पर रख दिया जाए। फिर मुझे बीच में टोकना भी ठीक नहीं। मैं यह कह रहा था कि सिनेमा ने साहित्य को अपने इशारों पर नचाना शुरू कर दिया। सिनेमा की सभी बातें साहित्य में प्रवेश करने लगीं हैं। सिनेमा ने साहित्य के विषय और उसकी 'ध्वनि' को ही प्रभावित नहीं

किया, बल्कि उसकी गति और दिशा को भी बदल दिया—साहित्य का जीवन भी सिनेमा के रीति-रिवाजों और रूढ़ियों से बँधकर चलने लगा। जिस 'हिट' शब्द का प्रयोग फिल्मों के लिए होता था, वह अब किताबों के लिए भी होने लगा। हालीवुड के ढाँचे पर ही साहित्य की इमारत की भी नींव डाल दी गई। लेखक और उसकी कला के चर्खे को ताक पर रखिए। बस, मशीन का बटन दबाइए और देखिए कि किस प्रकार यह लेखक और उसकी किताब इस छोर से उस छोर तक "हिट" बन जाती है। बड़े ही कायदे से यह मशीन काम करती है। एक साधारण आदमी भी समझ सकता है कि इस चमत्कार के पीछे क्या रहस्य है। प्रतियोगिता, बुक-क्लब, प्रेस, फिल्मीकरण, रेडियो,—यह सब इसी एक मशीन के मुख्य पुर्जे हैं। बटन को दबा कर चाहे जिसको, पलक झपकते, आस्मान पर चढ़ा कर 'हिट' बनाया जा सकता है।

"विज्ञापन से बढ़कर कोई चीज नहीं," पी.एच.पी. ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, "पलक झपकते प्रसिद्ध करने की यह मशीन अमरीका की अपनी ईजाद है। यह न हो तो उद्योग-धन्धों का ही नहीं, साहित्य और राजनीति का भी दिवाला निकल जाये। विज्ञापन की कला से सम्बन्धित जितना अधिक साहित्य हमारे यहाँ प्रकाशित हुआ है, उसका हिसाब लगाना कठिन है। विज्ञापन अमरीकी जनता के जीवन का अंग बन गया है। युद्ध से पहले अमरीका के अखबार और बाजार एक रंगहीन, गंधहीन पेटेण्ट तरल पदार्थ 'नुजलो' के विज्ञापनों से भरे रहते थे। इसके सेवन से रंग में निखार आता था, शरीर में फुर्ती और चुस्ती का संचार होता था। सभी विज्ञापनों में 'नुजलो' के ये गुण घोषित किए जाते थे। स्टेण्डर्ड तैल कम्पनी ने इसे उन चीजों से तैयार किया था जो पहले बेकार समझ कर नष्ट कर दी जाती थीं। लाखों अमरीकियों ने इसका सेवन शुरू किया। इसके गुणों की बात जाने दीजिए, इसका अधिक सेवन करने से पेट की आँतें कमज़ोर पड़ जाती थीं। इसके बाद लिस्टरीन का चक्र चला। डाक्टरों ने बार-बार चेतावनी दी कि लिस्टरीन एक धोखा है। लेकिन विज्ञापनों की आवाज़ के सामने इन डाक्टरों की एक नहीं चली। विज्ञापनों की इस शक्ति को अमरीका ने अच्छी

तरह समझा है। विज्ञापन-कला विश्वविद्यालयों में अध्ययन का एक विषय बन गई है। हारवर्ड यूनिवर्सिटी अच्छे विज्ञापनों पर प्रतिवर्ष पुरस्कार और डिग्रियाँ प्रदान करती है।"

"दवाइयाँ, फिल्म और किताबें," पी.एच. पी. ने कुछ रुक कर कहा—"विज्ञापन पर ही इन सब की सफलता निर्भर करती है। विज्ञापन की मशीनरी हमारे यहाँ इतनी पूर्ण है कि······"

कहते-कहते पी.एच. पी. रुक गया। उसने अनुभव किया कि मैं उसकी बात सुन नहीं रहा हूँ और यह बात सच भी थी। मेरा ध्यान खिड़की से बाहर दिखाई पड़ने वाले एक दूसरे दृश्य की ओर चला गया था।

[११]

सड़क की पटरी पर एक आदमी खड़ा था, जिसे रिपोर्टरों और अखबारों के लिए चित्र लेने वाले फोटोग्राफ़रों ने घेर रखा था। वह आदमी हरे रंग का नकाब डाले हुए था।

मैंने कुछ आतंकित-सी नजर से पी.एच.पी. की ओर देखा,—"यह कौन है ? कोई डाकू तो नहीं है ?"

उसे देखकर मुझे लगा कि बस अब गोलियाँ चलने की आवाज सुनने भर की देर है। लेकिन सो कुछ नहीं हुआ। नकाब पहने व्यक्ति ने कोई उत्पात नहीं किया, बल्कि वह कायदे के साथ ऐसी मुद्रा और अन्दाज में खड़ा हो गया जिससे कि फोटोग्राफरों को उसका चित्र लेने में आसानी हो।

"यह कौन है ?" मैंने पूछा।

पी. ऐच. पी. मेरा सवाल सुनकर मुस्करा दिया।

"फिल्मी दुनियाँ की भाँति" पी. एच. पी. कहता गया,—"किताबों की दुनियाँ में भी स्टार लेखकों का समावेश हो गया है। हालीवुड की फिल्म-स्टार-प्रणाली ने साहित्य के क्षेत्र में भी दखल जमा लिया है। जिनकी किताबें अधिक बिकती हैं वे स्टार-लेखक की उपाधि प्राप्त करते हैं। इस उपाधि को पाने के दो तरीके हैं,—एक तो विज्ञापन की मशीनरी को चालू

करके, जिसकी बागडोर मालिकों के हाथ में होती है और दूसरी अपनी प्रतिभा के सहारे......"

"यह स्त्रियों की एक पत्रिका का संवाददाता है। इसने एक उपन्यास लिखा है जिसमें भविष्य में होने वाले कीटाणु-युद्ध का कपोल-कल्पित चित्र खींचा गया है। इसका यह नकाब एक पब्लिसिटी-स्टण्ट है,—लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने का एक शिगूफा है। लेकिन स्टण्ट की भी एक सीमा होती है। दो अत्यन्त प्रसिद्ध लेखकों ने भी नकाब का प्रयोग किया था। कई वर्ष तक वे नकाब पहन कर सार्वजनिक उत्सवों और पार्टियों में शामिल होते रहे। उन्हें कोई नहीं पहचान सका। जहाँ देखिये, जनता में उन्हीं का जिक्र सुनाई पड़ता था। तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगीं। कोई कहता था कि ये सिंग-सिंग से लम्बी सजा भुगत कर आये हैं। कुछ कहते कि इनके चेहरे बुरी तरह बिगड़े हुए हैं, सम्भवतः किसी ने नाक-कान काट लिए हैं, इसलिए नकाब डाले रहते हैं। कुछ कहते कि ये बहुत ही बड़े परिवार के लोग हैं जो अपने लेखक के पेशे से लज्जित हैं।

"इन दोनों लेखकों में से एक का नाम एलेरी क्वीन था, दूसरे का बार्नबी रौस। दोनों जासूसी कहानियाँ लिखते थे और दोनों की अपनी अलग और भिन्न शैली थी। नकाब ने उनके रहस्य में वृद्धि की और इस रहस्य ने उनकी किताबों की बिक्री में वृद्धि की। जितना ही अधिक वे अपने को छिपाने में सफलता प्राप्त करते, उतना ही अधिक उनकी किताबें बिकतीं। आखिर एक दिन उनका रहस्य प्रकट हो गया। इस छोर से उस छोर तक एक हलचल मच गयी। दूसरे युद्ध के शुरू होने से कुछ ही पहले विज्ञापनों ने घोषित किया कि एलोरी क्वीन अपनी किताब पर बने फिल्म में खुद अभिनय भी करेगा। तभी यह भी मालूम हुआ कि एलोरी क्वीन वास्तव में कोई एक क्वीन नहीं, बल्कि दो व्यक्ति हैं जो बारी-बारी से नकाब पहन कर जनता के कौतुक और उत्सुकता में वृद्धि करते रहे हैं। बात इतने पर ही समाप्त नहीं हो गई। १९४१ में दूसरे 'नकाब' का भी रहस्योद्घाटन हो गया। दूसरे 'नकाब' अर्थात् बार्नबी रौस की पुस्तक 'ट्रेजेडी आफ एक्स' का जब जेबी संस्करण

प्रकाशित हुआ तो खुद रौस ने घोषित किया कि बार्नबी रौस नाम का कोई व्यक्ति नहीं है। यह असल में 'क्वीन' का ही असली नाम है और 'क्वीन' किसी अन्य व्यक्ति का बनावटी नाम है। इसके बाद १९४२ में जब क्वीन की एक किताब "मनहूस नगर" का जेबी संस्करण प्रकाशित हुआ तो लेखक की ओर से अधिकृत घोषणा की गई कि 'क्वीन' नाम से लिखने वाले दो चचा जाद भाई फ्रैडरिक डैनी और मैनफ्रेड ली हैं। पूरे नौ साल तक इन दोनों ने अमरीकी जनता को अपने नकाबों में उलझाये रखा और एलेरी क्वीन का नाम सबकी जबान पर चढ़ गया। आज क्वीन ने राष्ट्र-व्यापी महत्व का स्थान प्राप्त कर लिया है। अब वह अमरीका के जासूसी साहित्य के केन्द्रीय पत्र 'एलेरी क्वीन्स मिस्ट्री मैगजीन' का सम्पादक है।

"डैनी और मैनफ्रेड ली ने प्रसिद्ध होने के लिए निश्चित और पक्का मार्ग चुना। अमरीकी जनता 'सनसनी' और 'हलचल' की भूखी है। सुप्रसिद्ध अमरीकी लेखक एच. एल. मैन्कन ने ठीक ही लिखा था कि जासूसी और भेद भरी चीजों के प्रति आकर्षण आज अमरीकी जनता की प्रकृति में शामिल हो गया है।

तरंग में आकर इसी मैन्कन ने एक बार कहीं यह लिख दिया कि अमरीका में सबसे पहला स्नानागार,—या स्नान करने की प्रथा—सिनसिनाटी नामक जगह में शुरू हुई। मैन्कन की इस बात को इतना 'सत्य' मान लिया गया कि पत्र और अखबारों ने इसका खूब विज्ञापन किया, यहाँ तक कि वैज्ञानिक पुस्तकों में भी मैन्कन के उद्धरण दिखाई देने लगे। जब खुद मैन्कन ने अपनी बात का खण्डन किया तो किसी ने नहीं सुना,—अमरीकी जनता 'खण्डनों' में विश्वास नहीं करती,—खण्डन को स्वीकार करने का मतलब है इस बात को स्वीकार करना कि कितनी आसानी से हम बेवकूफ बन जाते हैं"।

"इस तरह की एक कहानी मैं भी पढ़ चुका हूँ," मैंने कहा,—"एक प्रमुख साहित्यिक विद्वान् ने लेखकों और आलोचकों की एक सभा में यह पूछा कि क्या आप में से किसी ने रूसी, युक्रेनी, पोलिश और चैक-साहित्य के प्रवर्तक सुप्रसिद्ध लेखक फ्योदोर दि मिश्रीविच लाशेविच का नाम सुना है?

इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं दे सका, क्योंकि किसी ने इस बड़े लेखक का नाम नहीं सुना था। सबको अपना 'अज्ञान' स्वीकार करना पड़ा। इसके बाद उस विद्वान् ने इस रूसी लेखक के बारे में एक लम्बा भाषण दिया। इस भाषण को सबने बड़े ध्यान और दिलचस्पी से सुना। इतना ही नहीं, आगे चलकर लाशेविच के नाम से कविताओं का एक संग्रह भी प्रकाशित हुआ। लेकिन यह खेल अधिक दिन नहीं चल सका। अन्त में स्वीकार करना पड़ा कि यह सब मजाक था।"

पी. एच. पी ने कहा कि उसे इस मजाक के बारे में अच्छी तरह मालूम है। वह खुद इस मजाक का शिकार हो गया था और उसके बौस ने पाँच हज़ार शब्दों के एक ऐसे लेख का लिखना स्वीकार कर लिया था जिसमें समूचे स्लाव साहित्य के पिता लाशेविच की प्रेम-कथाओं का जिक्र हो। एक प्रकाशक ने अपने साहित्यिक संदर्भ-ग्रन्थ तक में लाशेविच के नाम को शामिल कर लिया था। जब गलती मालूम हुई तो उसे अलग किया।

ऐसी है अमरीकी जनता" पी. एच. पी ने कहा,—"और उसका ध्यान आकर्षित करने के किए सभी तरह के तरीके काम में लाये जाते हैं। एलेरी क्वीन और क्रैग राइन्स ने तो खैर अपना विज्ञापन अपने-आप किया, लेकिन अधिकांश लेखक ख्याति के लिये विज्ञापन की भारी-भरकम मशीनरी पर निर्भर रहते हैं। जिस तरह फिल्मों में काम करने वाली अभिनेत्रियों के चित्र और उनकी प्रेम-कथायें छाप कर उनका प्रचार किया जाता है, वैसे ही लेखकों के चित्र और उनके निजी तथा गुप्त जीवन की कहानियाँ भी छापी जाती हैं। जिन लेखकों को यह 'सौभाग्य' प्राप्त है, वे "पिन-अप" श्रेणी के लेखक कहे जाते हैं। यह 'पिन अप' शब्द भी सिनेमा की देन है। 'न्यूज वीक' और दूसरे पत्र आर्ट पेपर पर अभिनेत्रियों के चित्र छापते हैं, पाठक इन चित्रों को काट कर पिन से दीवार पर लटका लेते हैं,--पाठकों की दीवार पर जिसका चित्र पहुँच जाये वही 'पिन अप' श्रेणी का लेखक या अभिनेता बन जाता है। पाठक लेखक के चित्र को अपनी दीवार पर लगा लेता है और प्रकाशक,—या हालीवुड,—लेखक को अपनी दीवार पर लोहे की पिन से—नहीं, सोने की कील

से,—जड़ देता है।"

कुल मिलाकर यह एक ऐसा चक्र बन गया है कि जिसमें एक बार फँस कर बाहर निकलना असम्भव हो जाता है," पी. एच. पी ने कहा—"कल तक जिसे कोई नहीं जानता था, अखबार और रेडियो उसे आसमान पर चढ़ा देते हैं। बढ़ती हुई ख्याति के साथ-साथ लेखक के जीवन में भी परिवर्तन हो जाता है। पुराने घर को छोड़ कर वह नये बँगले में प्रवेश करता है। बँगले को सजाने के लिए नया साजोसामान खरीदता है। किश्तों पर लिन्कन कार अपने घर ले आता है। रेफ्रीजिरेटर से लेकर बिजली की मालिश तक का सामान उसके जीवन का अंग बन जाता है। फ्लोरिदा या पेरिस जाने की अपनी चिर पोषित इच्छा को वह पूरा करता है। खर्च भी बढ़ता जाता है और खर्च के साथ-साथ मंहगी भी बढ़ती जाती है। और जो कुछ भी वह लिखता है, सब इस खर्च और मंहगी के पेट में समा जाता है। अपने प्रकाशक को निश्चित समय पर और निश्चित संख्या के शब्द लिखकर उसे देने ही होंगे, नहीं देगा तो······"

कुछ रुक कर पी. एच. पी. ने फिर कहना शुरू किया—"आखिर वह स्थिति आ जाती है जब लेखक को सिनेमा की शरण लेनी पड़ती है। कोई भी प्रकाशक या पत्र-संचालक सिनेमा का, हालीवुड का, मुकाबला नहीं कर सकता। हालीवुड में जाने के बाद······"

बीच में ही बात काट कर मैंने कहा—"ला बताइले" नामक पत्र में मैंने एमिल लुदविग का एक लेख पढ़ा था। इस लेख का शीर्षक था 'हालीवुड के सात स्तम्भ'। इसमें लुदविग ने लिखा था कि लेखकों की लाशों पर हालीवुड की इमारत खड़ी है,—उन लेखकों की लाशों पर जिन्होंने हालीवुड के हाथों अपनी आत्मा बेच दी थी!"

"टाइप मैगजीन ने भी," पी-एच-पी ने कहा—"एक बार लिखा था कि कोई भी साहित्यिक बिना अपने को चोट पहुँचाए हालीवुड से नहीं आ सकता। लुदविग का यह सौभाग्य था कि वह सही-सलामत वहाँ से चला आया और उसने लेखकों के इस मृत्यु-कैम्प पर सही शब्दों में प्रकाश

डाला। इसमें सन्देह नहीं कि फिल्मों की इस राजधानी की सड़कें लेखकों की लाशों से पटी हुई हैं। मेरा मन घृणा से भर जाता है जब सोचता हूँ कि हमारा साहित्य किधर जा रहा है,—एक ऐसे गर्त की ओर जिससे मृत्यु के सिवा और कोई छुटकारा नहीं दिला सकता!"

"दोष सारा हालीवुड का ही नहीं है,—खुद उन लेखकों का भी है जो······"

पी. एच. पी. दाँत पीस कर उठ खड़ा हुआ। उसके हाथों की मुट्ठी बँध गई थीं और वह कह रहा था,—"यह तुम मुझ से कहते हो,—उस आदमी से कहते हो जो चक्की के दो पाटों में पिस रहा हो। हम में कोई ऐसा नहीं है जो जरा भी हिल-डुल सके। सभी मजबूती के साथ जकड़े हुए हैं,—सोने की कीलों से जड़े हुए हैं। प्रकाशक और हालीवुड, चक्की के इन दोनों पाटों ने साहित्य की क्या गति कर डाली है, अपनी आँखों से जब तक नहीं देखोगे, तुम्हें विश्वास नहीं होगा!"

[१२]

पी. एच. पी. मुझे उस इमारत में ले गया जो बौस के दफ्तर की खिड़की से दिखाई पड़ती थी। खजूर के पेड़ों के बीच स्थित सफेद रंग के ब्लाक, उनके सपाट अग्रभाग और आयताकार खिड़कियाँ।

पी. एच. पी. ने कुछ रुक कर दरबान से दो-चार बातें कीं। सिनेरियो विभाग में प्रवेश करने की उसने हमें अनुमति दे दी; लेकिन एक शर्त पर। वह यह कि हम, किसी भी हालत में, भूलकर भी किसी कथानक का भेद न खोलें। कारण कि दूसरे लोगों के कथानक चुरा लेने का डर है। अक्सर दूसरे स्टूडियो तरह-तरह के आदमी भेज कर कथानकों का पता लगाने की कोशिश किया करते हैं। एक-दूसरे के कथानकों की चोरी एक आम बात हो गई है।

सिनेरियो-विभाग के दरवाजे पर एक भारी-भरकम दरबान बैठा था। उसकी चपटी नाक और मजबूत हाथों से मालूम होता था कि घूँसेबाजी का उसने जन्म से अभ्यास किया है,—अर्थात् वह पेशेवर घूँसेबाज है।

एक लम्बे गलियारे में से होकर हम गुजरे जिसके दोनों ओर कमरे बने थे। किताब और मैगजीनों से लदी मेजों के पीछे बहुत से लोग, स्त्री और पुरुष दोनों ही, बैठे काम कर रहे थे। ये रंगीन पेन्सिलों से कुछ रेखांकित करने और स्टेनोग्राफरों को बोलकर लिखाने में व्यस्त थे। मेज पर लगी तख्तियों पर मैंने सभी देशों के नाम लिखे हुए देखे।

"इस विभाग में," पी. एच. पी. ने कहा,—"दुनियाँ-भर में प्रकाशित मैगजीनों की छान-बीन की जाती है। अगर किसी मैगजीन में कोई रोचक प्लाट (कथानक) दिखाई पड़ता है तो उसे अलग टाँक लिया जाता है।

"उदाहरण के लिए," वह कहता गया,—"पुर्तगाल की मेज पर काम करने वालों को लिस्बन के एक मेगजीन में असाधारण रूप से एक रोचक कहानी दिखाई पड़ती है। इस कहानी का कथानक एक इण्डैक्स-कार्ड पर टाँक लिया जाता है,—जैसे रेड राइडिंगहुड नामक एक छोटी लड़की अपनी नानी से मिलने जाती है। रास्ते में उसे एक भेड़िया मिलता है। भेड़िया लड़की से पहले नानी के घर पहुँच जाता है और उसे चीर-फाड़ डालता है। फिर लड़की आती है। भेड़िया नानी की आवाज की नकल कर लड़की को भी मार डालता है। फिर उसके माँ-बाप उसकी खोज में निकलते हैं और नानी के घर पहुँच कर भेड़िये का पेट चीर डालते हैं। पेट चीरते ही लड़की और नानी सही सलामत, बाहर निकल आते हैं। इस प्रकार कहानी का 'सुखान्त' अन्त होता है।

"कहानी की यह वाह्य रेखा फिर कहानी-विभाग में भेज दी जाती है। साथ ही विषय, पात्रों और सेटिंग्स के बारे में निर्देश भी नत्थी होते हैं। कहानी विभाग के लोग अपनी या दूसरों की कल्पना को काम में लाकर वाह्य रेखा के आधार पर कहानी बनाते हैं। इस काम में उन्हें दुनियाँ-भर के मैगजीन-विभाग के कथानक टँके-इण्डैक्स-कार्डों से बड़ी मदद मिलती है। उदाहरण के लिए पुर्तगाल वाली उसी सुखान्त कहानी की वाह्य-रेखा को लीजिए। उसके इण्डेक्स कार्ड पर बाकायदा नम्बर पड़ा है,—पी. समूह, आर. आर. एच. ई। इसके आधार पर कहानी-विभाग कहानी का निर्माण करता है। रैड

राइडिंग हुड नामक एक छोटी लड़की अपनी बीमार नानी को देखने के लिए रवाना होती है। मार्ग में अनानास के पेड़ों का जंगल पड़ता है। सड़क के एक मोड़ पर उसकी एक भेड़िये से मुठभेड़ होती है। दोनों के संवाद। यह पता लगने पर कि लड़की कहाँ जा रही है, भेड़िया किसी दूसरे रास्ते से लड़की से पहले उसकी नानी के घर पहुँच जाता है। इस तरह कहानी आगे बढ़ती है और उसका अन्त 'सुखान्त' होता है।

"सिनाप्सिस-विभाग का फिर नम्बर आता है। इस विभाग में कथानक की प्रत्येक कड़ी का रूप क्या होगा, वह किस प्रकार दूसरी कड़ी से जुड़ेगी, कैसे-कैसे मोड़ और उतार-चढ़ाव उसे पार करने होंगे। यह सब विस्तार के साथ देखा जाता है। जैसे,—एक छोटी लड़की है। रेड राइडिंग हुड उसका नाम है। एक पहाड़ी के उतार पर स्थित गाँव में वह रहती है। उसे अपनी नानी का एक खत मिलता है। नानी ने लिखा कि उसे जूड़ी देकर बुखार आता है। इस बुखार की जो भी सब से अच्छी दवा मिले, उसे अपने साथ लेकर राइडिंग हुड चली आये। अगली सुबह, तड़के ही राइडिंग हुड चल पड़ती है। एक पोटली में उसके लिए उसकी माँ खाना बाँध देती है। नानी के लिए दवा भी इस पोटली में रख दी गई है। विदा करते समय माँ उसका मुँह चूमती है। नानी के घर जाने वाली सड़क अनानास के जंगलों के बीच से गुजरती है। सड़क के एक मोड़ पर, ठीक उस जगह जहाँ एक टूटा हुआ गिरजा खड़ा है, उसे भूरे रंग का एक भेड़िया मिलता है। भेड़िया आदमी की तरह बोलता है,—आदि।"

कलात्मक प्रभाव में वृद्धि करने के लिए दवा के नाम आदि का कल्पना के सहारे आविष्कार नहीं किया जाता,—बल्कि वह सचमुच की दवा होती है। इसके लिए पहले किसी पेटेण्ट दवा के निर्माता से बातचीत की जाती है। जब उससे तय हो जाता है तो राइडिंग हुड की नानी के लिए वह भेजी जाती है।

इसके बाद 'चीफ' से राइडिंग हुड के कथानक को पास कराया जाता है और उसे "पुनर्लेखन विभाग" में भेज दिया जाता है। अगर प्रबन्ध-विभाग यह निर्णय करता है कि इस कहानी की पृष्ठभूमि किसी दूर देश की होनी

चाहिए तो उसे 'अजब विभाग' में भेज दिया जाता है। इस विभाग के लोग राइडिंगहुड को तिब्बत में ले जाते हैं और उसका नाम बदल कर था-नगा-मा रख देते हैं। उसके कपड़े भी तिब्बती हो जाते हैं। नानी के घर जाने का मार्ग भी अब अनानास के जंगलों में से होकर नहीं बल्कि बांसों के जंगलों में से होकर जाता है। टूटे-फूटे गिरजे की जगह अब बौद्ध मन्दिर ले लेता है और भेड़िये की जगह शेर से अब लड़की की मुलाकात होती है। लेकिन अगर चीफ, प्रबन्ध-विभाग यह निर्देश देता है कि कहानी में समुद्री दृश्य होने चाहिएँ तो समुद्री दृश्यों वाले विभाग में राइडिंगहुड पहुँच जाती है। न्यूज़ीलैण्ड या ब्राज़ील की पृष्ठभूमि में अब कहानी आगे बढ़ती है। किश्ती या बजरे में बैठ कर राइडिंगहुड अपनी नानी के पास जाती है और जंगल में किसी भेड़िये या शेर की जगह आकाश-दीप के पास मगरमच्छ से अब उसकी मुलाकात होती है। और अगर प्रबन्ध-विभाग यह निर्णय करता है कि इसे जासूसी होना चाहिए तो राइडिंगहुड जासूसी विभाग में पहुँच जाती है। अपनी धनी नानी के यहाँ जब वह गाड़ी में सवार होकर जाती है तो गाड़ी में जेल से अभी-अभी भाग कर आये 'भेड़िया' नामक डाकू से उसकी मुठभेड़ होती है। यह डाकू छोटी लड़कियों की हत्या करने का आदी होता है। इस प्रकार पृष्ठभूमि और नाम बदल कर राइडिंगहुड की कहानी को चाहे जो रूप दे दिया जाता है। लेकिन यह सब होने पर भी एक चीज है जो नहीं बदलती,—वह चीज है उस अमरीकन दवा का नाम जो पीने में जायकेदार, बहुत ही सस्ती और फायदा करने में बेजोड़ होती है।

अधिक संभावना इस बात की होती है कि प्रबन्ध-विभाग जासूसी संस्करण को पास करे। इसके बाद कहानी "पहला ड्राफ्ट विभाग" में जाती है और वहाँ से कुछ इस रूप में निकलती है: सुबह का समय, गाँव दिखाई पड़ रहा है। लाल टोपी पहने एक छोटी लड़की। अपने माँ-बाप से बिदा होकर चल देती है। अनानास का भयानक जंगल। सड़क के मोड़ पर, भारी-भरकम पेड़ के पीछे, जेल के कैदियों जैसी धारीदार पोशाक पहने एक आदमी खड़ा है। उसके सीने पर भेड़िये का चित्र गोदा हुआ है। छोटी लड़की पेड़

के निकट पहुँचती है। इस प्रकार अनेक खून जमा देने वाली घटनाओं के बाद कहानी का 'सुखान्त' होता है।

यह पहला ड्राफ्ट फिर 'खास संशोधन विभाग' में पहुँचता है। इस विभाग में उसका पूरी तरह 'इलाज' किया जाता है,—अर्थात् उसे अधिक रक्त और मांस प्रदान किया जाता है, रंग और रूप उसमें भरा जाता है। उसकी धड़कनों और उतार-चढ़ावों का बाकायदा प्रबन्ध किया जाता है। संवाद आदि भी इस विभाग में आने के बाद लिखे जाते हैं।

यह बहुत ही महत्वपूर्ण विभाग है," पी. एच. पी. ने कहा,—"पत्थर की प्रतिमा में प्राणों की प्रतिष्ठा इसी विभाग में होती है।"

इस विभाग में काफी क्रियाशीलता दिखाई पड़ती थी। अन्य विभागों की तरह इस विभाग में काम करने वालों की आकृतियाँ भी स्पष्ट नहीं थी। मगर अब मुझे इस पर आश्चर्य नहीं हुआ।

सहसा एक नवयुवक तेजी के साथ कमरे में आया। अन्य लोगों से भिन्न उसका एक अपना व्यक्तित्व और एक अपनी आकृति थी। वह उत्साह और क्रियाशीलता से भरा हुआ था। उसके गालों पर लाली और उसकी मूछें महीन थीं। मालूम हुआ, यह प्रबन्ध-विभाग का आदमी है।

"क्या के-एस-टी बहत्तर तैयार है ?" दरवाजे के पास वाली मेज पर बैठे हुए लोगों से उसने पूछा। इस मेज पर 'घटना-विभाग' की तख्ती लगी हुई थी।

"कापी आगे भेज दी गई है", उन्होंने बताया,—"कुछ नयी घटनाएँ भी जोड़ दी गई हैं। जब छोटी लड़की उस बिस्तरे पर बैठती है जिस पर बीमार नानी की जगह भेड़िया लेटा है तो उसका बालों से भरा पंजा दिखाई पड़ता है। लड़की आश्चर्य से उसे देखती और सवाल पूछती है। दोनों में बातें होती हैं। चौथे भाग के तनाव को बढ़ाने के लिए दो आकस्मिक परिस्थितियाँ और जोड़ दी गई हैं: पहली घर की किसी चीज का सीढ़ियों पर से गिर कर आवाज करना और दूसरी कपबोर्ड के नीचे से बिल्ली के बच्चे का निकलना।

"लेकिन अच्छा यह हो कि सीढ़ियों वाली घटना यू-यू-अस्सी—

समुद्री डाकुओं के विवाह—के साथ जोड़ दो, और बिल्ली के बच्चे को पगानीनी की प्रेम-कहानी या मेरी अन्तोनियों में पहुँचा दो", उस युवक ने कहा—"कम्बल के नीचे से पंजे के दिखाई पड़ने वाले प्रसंग के बारे में 'हास्य-विभाग' से भी सलाह लो और उससे कहो कि दो-चार हँसने वाले प्रसंग और डाल दें। यह करने के बाद टी-एफ-पंद्रह सीरीज़ के तीन पहले ड्राफ्टों—तूफानी पागलपन, आतंक और तूफानी अजूबा को भी पूरा कर डालना।"

'रोमांच-विभाग' ने बताया कि उस दृश्य को अधिक रोमांचकारी बना दिया गया है जिसमें लड़की अपने आप को नानी के बजाय एक भेड़िये के साथ अकेला पाती है। भेड़िये का डरावना पंजा लड़की के गले की ओर बढ़ता है। प्रभाव को बढ़ाने के लिए पृष्ठभूमि में काली छाया का समावेश कर दिया गया है।

"अच्छा हो कि इसके लिए 'हत्यारे का दस्ताना' नामक फिल्म वाला दृश्य ले-लो। वह दृश्य इतना प्रभावपूर्ण है कि हमेशा और हर बार प्रभावित करेगा। उसे इस फिल्म में भी दोहरा सकते हो।"

सैक्स-अपील-विभाग ने सलाह दी कि भेड़िये को भरमाने के लिए लड़की को कुछ हाव-भाव भी दिखाने चाहिएँ। लेकिन इसके लिए लड़की की उम्र कुछ अधिक होनी चाहिए। नहीं तो प्रभाव कम हो जायेगा।

कुछ क्षण सोचने के बाद युवक ने कहा,—"अच्छी बात है; इस दृश्य के दो संस्करण तैयार करो। एक में लड़की की उम्र दस साल की हो; दूसरे में उसकी उम्र बड़ी हो,—एक दम चलता-पुर्जा!"

इसके बाद युवक उस मेज की ओर गया जिस पर 'संवाद' की तख्ती लगी थी। इसके पास ही दूसरी मेजें थीं जिन पर "स्थानिक रंग", "आँसू-खींच", "हत्या-पद्धति" की तख्तियाँ लगी हुई थीं।

"तुम लोगों को आज हो क्या गया है?" संवाद वालों से युवक ने कहा,—"लड़की-भेड़िया-संवाद का बाद वाला भाग बीस दो बार काट चुके हैं। जरा चुस्ती से काम करो। भेड़िये को पक्के डाकू की तरह बोलना चाहिए और लड़की को भोलेपन के साथ उसकी बातों पर यकीन करते जाना चाहिए।

जल्दी करो। इसे पूरा करने के बाद 'मदांध फरिश्ता' और 'हरजाई' के संवाद भी पूरे कर डालना।"

सबको निर्देश देकर युवक चला गया। हम भी उसके पीछे-पीछे चल दिए।

[१३]

गलियारे से दूसरे छोर पर, सब से अन्त में, एक और कमरा था।

"अडाप्टेशन विभाग है," पी. एच. पी. ने बताया—"यह चोरों का विभाग है। यहाँ लेखकों से अनुमति लिए बिना ही उनके कथानकों को उड़ाने का काम किया जाता है। इस विभाग के कर्मचारी मोटर-चोरों की तरह हैं। जिस तरह वे मोटर को चुराते हैं, उस पर दूसरा रङ्ग चढ़ाकर उसका लाइसेन्स-टिकट बदलवा लेते हैं। उसी तरह ये लोग भी किसी उपन्यास या नाटक को लेते हैं। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो ये लोग बाकायदा डाका डालते हैं। किसी विदेशी फिल्म को लेकर ये लोग उसे फिर से शूट करते हैं और नाम बदल कर बाजार में चालू कर देते हैं। कभी-कभी तो नाम तक बदलने की भी तकलीफ गवारा नहीं करते। मारसेल क्रेन के फ्रेंच चित्र के साथ ऐसा ही हुआ। इसी तरह एक अंगरेजी फिल्म को भी उड़ा लिया गया था।"

"अगर मैं भूलता नहीं हूँ तो बूथ टार्किंगटन ने, अनुमति के बिना उसके उपन्यास का फिल्म बनाने पर, वार्नर ब्रदर्स के विरुद्ध मुकदमा दायर किया था।"

"और, इस तरह की घटनाएँ तो अब एक आम बात हो गई हैं। टारकिंगटन के पास तो खैर इतनी क्षमता थी कि वह मुकदमा लड़ सका। अन्य बहुत से लेखक तो मन मसोस कर बैठ रहते हैं। फिर क्लासिक्स का जिस प्रकार हुलिया बदला जाता है, उसे देखकर तो आज के लेखकों के पूर्वज अपनी कब्रों में भी तिलमिला उठते होंगे। तौल्स्तौय की अन्ना कैरेनीना को 'सुखान्त' बनाने के लिए जिस प्रकार तोड़ा-मरोड़ा गया वह ' ..."

गलियारे के दोनों ओर बने कमरों की ओर देखकर, अपनी गरदन को

उदासी के साथ हिलाते हुए, पी. एच. पी ने कहा—"अब तक लेखकों के अलग अपने क्षेत्र, शैली और स्कूल होते थे,—उपन्यास लिखने वाले, कविताओं की रचना करने वाले, नाटक लिखने वाले, आलोचक और पत्रकार आदि। लेकिन हालीवुड ने उनके इस व्यक्तित्व को खत्म कर दिया, और वे फिल्म-उद्योग रूपी मशीनरी के पुर्जे बनकर रह गये हैं। प्रत्येक लेखक अपने आप में पूर्ण किसी एक रचना को जन्म नहीं देता, वरन् अलग-अलग अंगों का निर्माण करता है। कहानी, उपन्यास और कविता लिखने वालों की जगह अब प्लाट खोजने वालों, प्लाट बनाने वालों, घटनाओं को जोड़ने वालों, पृष्ठभूमि के दृश्य बनाने वालों, कथोपकथन लिखने वालों, हँसी और आँसू निकालने वालों, सेक्स अपील पैदा करने वालों, रोंगटे खड़े करने वालों, चोरी के माल को फिर से रंग-चुन कर पेश करने वालों ने ले-ली है। लेखकों की अब यह दशा हो गयी है। अगर ऐसा न किया जाय तो उत्पादन न बढ़े। यह 'कन्वेयर सिस्टम' कहलाता है। मेरा वश चले तो मैं फिल्मी दुनियाँ को जलाकर धूल में मिला दूँ।"

"इसमें फिल्मी दुनियाँ का नहीं," मैंने कहा,—"उन लोगों का दोष है जो उसके सूत्राधार हैं, उस व्यवस्था का दोष है जो........"

"फिर वही राजनीति ?" पी. एच. पी. ने कहा,—"मैं लेखक हूँ; और लेखक की हैसियत से उस निरंकुश मनमानी का जिक्र कर रहा हूँ जो सिनेमा ने साहित्य के साथ की है। मेरा मतलब खास हालीवुड से है, उसके मालिकों से नहीं। मालिकों को तो चाहे जब बदला जा सकता है, लेकिन उनके बदलने से हालीवुड नहीं बदल जायगा। जब मैं हालीवुड का नाम लेता हूँ तो मेरा मतलब कला के उस रूप से है जिसे हालीवुड ने, सिनेमा ने, जन्म दिया है; और जब मैं हालीवुड के बौसेज का जिक्र करता हूँ तो मेरा मतलब मालिकों से नहीं, बल्कि उस भावना और विधान से है जो हालीवुड में व्याप्त है, जिसके नियंत्रण में सिनेमा की कला का दम घुट रहा है।"

"बहुत ठीक," मैंने कहा,—"मैं भी जब हालीवुड का नाम लेता हूँ तो मेरा मतलब हालीवुड ही होता है, और जब मालिकों का नाम लेता हूँ

तो·· ···"

"तुम्हारा दिमाग तो बिल्कुल जंगली है !" पी. एच. पी. ने हाथ हिला कर मेरी बात को हवा में उड़ाते हुए कहा और चुप हो गया,—लगता था जैसे वह खो गया हो।

[१४]

पी. एच. पी. गलियारे के दूसरे छोर पर होने वाली हलचल की ओर स्तब्ध-सी नजर से देख रहा था।

मेरा ध्यान भी उधर गया। अजब हलचल थी। आग बुझाने के पाइप निकाले जा रहे थे, मेज-कुर्सियों का ढेर दरवाजों के आगे जमा किया जा रहा था।

"क्या आग लगी है ?" मैंने पूछा।

पी. एच. पी. का चेहरा पीला पड़ गया और वह दोनों कंधों के बीच अपना सिर छिपाने की कोशिश करने लगा।

"आग से भी बदतर," उसने कहा,—"आज फिर गड़बड़ शुरू हो गई !"

बाहर मोटर साइकिलों के आने की घरघराहट सुनाई दी। एक चीख मारकर पी. एच. पी. पास की खिड़की में से कूदकर फूलों की क्यारी में जा गिरा। दो हट्टे-कट्टे आदमी एक युवती को पीट रहे थे। उन्होंने जब पी. एच. पी. को देखा तो उसके सिर पर भी एक डंडा रसीद कर दिया। युवती लँगड़ाती हुई भाग निकली। मैं भाग कर पी. एच. पी. के पास गया। हट्टे-कट्टे आदमी बराबर के दरवाजे से बाहर खिसक गये। पी. एच. पी. को मैंने जमीन से उठाया और हम दोनों भाग कर बाजार में पहुँचे। बाजार में अच्छी-खासी भीड़ जमा थी। मैंने जानना चाहा कि मामला क्या है, मगर इसका मौका नहीं मिला। दोनों हाथों से अपने सिर को दाबे पी. एच. पी. फिर भाग खड़ा हुआ। मैंने भी उसका पीछा किया। पीछे से पिस्तौल चलाने की आवाज सुनाई दी। मोटर साइकिलों की घरघराहट और भी तेज होती जा

रही थी। हम एक गली में घुस गये और आने-जाने वालों से टकराते-बचते अन्त में एक ऊँची इमारत के खम्बों के पीछे हमने शरण ली।

"आखिर हुआ क्या ?" मैंने हाँपते हुए पूछा,—"क्या किसी की हत्या की गई ?"

पी. एच. पी. दोनों हाथों से अपना मुँह ढके खड़ा था। सुबकियों से उसका सारा बदन हिल रहा था। अपने को संभालने में उसे कई मिनट लग गये।

"अजीब मुसीबत है," पी. एच. पी. ने कहा,—"स्टूडियों के कर्मचारियों ने आज फिर हड़ताल कर दी है। पिछली हड़ताल १९४७ में शुरू हुई थी......सभी अखबारों में उसकी खबर छपी थी······कई सौ घायल हुए थे......"

"लेकिन तुम इतना आतंकित क्यों हो ? तुमने तो हड़ताल नहीं की ? "

"लेकिन वे यह थोड़े ही देखते हैं कि कौन हड़ताल कर रहा है और कौन नहीं। जो सामने पड़ जाता है, उसी पर चोट करते हैं। आँसू-गैस छोड़ते हैं। गन्दे-से-गन्दा मलबा उठाकर ऊपर उँडेलते हैं। सीधे आदमियों पर अपनी मोटर साइकिलें चढ़ा देते हैं...हरामी कहीं के......"

"आखिर किसे गाली दे रहे हो ?" मैंने पूछा।

"उन्हें जो डंडे चलाते हैं ... मोटर साइकिल-दल के सिपाही ... सब हरामी हैं...लेकिन वे पैसे के लिए यह सब करते हैं...उनके मालिक जो कहते हैं.... . "

"उनके मालिक कौन......कौन मालिक ?"

"तुम्हारा दिमाग तो बिल्कुल जड़ है।" पी. एच. पी. ने झुँझला कर कहा,—"मालिकों से मेरा मतलब है वे लोग जो असली सूत्रधार हैं, जो कभी सामने नहीं आते, लेकिन फिर भी .... "

एक ही गिनती में पी. एच. पी. सबके नाम गिना गया—फिल्म कम्पनियों के मालिकों के ही नहीं, उन लोगों के भी जो इन मालिकों का

सूत्र-संचालन करते हैं।

"असली मालिक यहाँ के बड़े-बड़े बैंक हैं," पी. एच. पी. ने कहा,—"राकफैलर का चेज़ नेशनल बैंक, मारगन बैंक, लीहमान ब्रदर्स बैंक, मारगन का एटलस कार्पोरेशन, डिल्लन रीड का बैंकिंग कार्पोरेशन.... ."

"बीसवीं सदी फौक्स कम्पनी किसके नियन्त्रण में है ?" मैंने पूछा।

"राकफैलर के।"

"और कोलम्बिया ?"

"कैलीफोर्निया बैंकर्स के।"

"और यूनिवर्सल ?"

"स्टैण्डर्ड कैपीटल बैंक।"

"और न्यूजरील स्टूडियो ?"

"मार्च आफ टाइम न्यूजरील मारगन के नियन्त्रण में है और यूनाइटेड न्यूज......ओह, सवाल पर सवाल करने की तुम्हें बुरी आदत पड़ गई है।"

पी. एच. पी. सड़क पर चलने लगा। मैंने भी उसके साथ-साथ कदम बढ़ाये। अपनी गरदन के पिछले भाग को वह अभी तक सहला रहा था।

"जहन्नुम में जायें ये सब !" उसने कहा,—"मुझे इनसे कोई वास्ता नहीं। इसी तरह लोग 'लाल' बनते हैं। मैं लेखक हूँ, सिनेरियो-विभाग में काम करने वाले लोगों की तरह लोहे की मशीन नहीं। मुझे साहित्य से दिलचस्पी है, फिल्म-कम्पनियों के मालिकों को कौन नचाता है, इससे मुझे कोई मतलब नहीं। मुझे सबसे अधिक चोट लगती है यह देखकर कि व्यापारिकता और मुनाफे की भावना ने किस हद तक हर जगह प्रवेश कर लिया है। मुनाफे के सिवा हमारे प्रकाशक और कुछ नहीं देखते।"

[१५]

सिगरेट खरीदने के लिए हम एक दूकान पर रुके। वहाँ क्लासिक्स के कुछ जेबी-संस्करण दिखाई दिये। ये जेबी-संस्करण अभी हाल ही में प्रकाशित होकर नये-नये बाजार में आये थे।

"यह देखो", मैंने पी. एच. पी. से कहा,—"कितने सस्ते में क्लासिक्स के ये जेबी संस्करण प्रकाशित किये गये हैं। इन संस्करणों की तारीफ करनी ही पड़ेगी।"

"तुम तारीफ करने की बात करते हो," पी. एच. पी. ने गुस्से में भर कर कहा,—"मैं कहता हूँ, इससे बढ़कर अपराध और कोई नहीं हो सकता। दिन-दहाड़े ये लोग क्लासिक्स की चोरी करते हैं, काट-छाँट कर उन्हें बराबर कर डालते हैं और फिर, ऊपर से रंग-चुन कर, उन्हें बिसातियों और दवा-फरोशों के यहाँ बेचने के लिए भेज देते हैं। हाल्डमैन जुलियस ने क्लासिक्स को जेबी बनाने के लिए उनमें इतनी काट-छाँट की है कि उन्हें अब पहचानना तक मुश्किल हो गया है। इसी तरह की हरकत नौफ आधुनिक लेखकों के साथ कर रहा है। उनकी किताबों का कीमा बनाकर, दूसरे नामों से, वह उन्हें बाजार में चलाता है।"

व्यंग-भरी मुद्रा के साथ पी. एच. पी. ने एक जेबी किताब की ओर संकेत किया। यह शेक्सपियर का जेबी संस्करण था जो खासतौर से आधुनिक पाठकों के लिए तैयार किया गया था।

"वीकली बुक रिव्यू' में इस जेबी संस्करण की आलोचना पढ़ कर देखो," उसने कहा—"आलोचक ने, शाब्दिक मानी में, इसे 'शेक्सपियर की हल्की डोज' कहा है। ये लोग इस तरह लिखते हैं मानो शेक्सपियर लेखक न होकर कास्टर आयल हो जिसकी हल्की और भारी खुराकें दी जाती हैं। पेटेण्ट दवाइयों की तरह ये लोग अब शेक्सपियर को बाजार-घाट उतार रहे हैं। एस्पिरीन के तर्ज पर तुम इसे शेक्सपिरीन भी कह सकते हो। वह दिन दूर नहीं है जब बाजार में 'डिकन्सोल', 'ह्यूगोल' आदि भी दिखाई पड़ने लगेंगे।"

सिगरेट स्टोर से हम बाहर निकल आए। पास ही एक और दूकान थी। उसके दरवाजे पर एक तख्ती लगी थी जिस पर लिखा था :

हमसे लिखाइए, अपने नाम से छपाइए !

कहानी और उपन्यास,
रिपोर्ताज और आलोचना,
भाषण और अभिनन्दन पत्र,
जीवनी और संस्मरण,
हम सभी कुछ सप्लाई करते हैं,
किफायती दाम, सन्तोषप्रद काम
हमसे लिखाइए, अपने नाम से छपवाइए :
[ए. ई. साहित्यिक एजेन्सी, शाखाएँ अमरीका-भर में ।]

"चलो, इसे भी देख लें," मैंने पी. एच. पी. से कहा ।

अन्दर प्रवेश करने पर सबसे पहले ही एक आकर्षक युवती से मुलाकात हुई । हमारे कुछ कहने से पहले ही उसने अपनी बात शुरू कर दी—

"किस तरह के लेखों से तुम्हारी दिलचस्पी है ? हमारी एजेन्सी हर तरह के आर्डर लेती है । समय पर हम काम देते हैं । तुरत काम कराना हो तो पच्चीस प्रतिशत अधिक देना होगा । अरे......"

उसने एक बार मेरी ओर और फिर पी. एच. पी. की ओर देखा । फिर कहा,—"तुम लोग तो खुद लेखक हो । क्यों, मैंने ठीक समझा न ? हम तुम्हें विषय वस्तु—लिखने की कच्ची सामग्री—भी दे सकते हैं । सभी तरह का कच्चा माल हमारे पास है ।"

"तुम्हारी एजेन्सी की कोई अपनी खास शैली भी है ?" मैंने उससे पूछा ।

"बाबा आदम से लेकर अति आधुनिक शैली तक, स्टाइल जो भी तुम्हें पसन्द हो," उसने कहा,—"हमारे पास सभी आधुनिक शैलियाँ मौजूद हैं ।"

यह कहकर उसने एक मोटी एलबम उठाई । इस पर लिखा था—शैलियों का सूचीपत्र ।" इसके हर पन्ने पर शैलियों के नमूने दिए हुए थे ।

"यह देखिये" युवती ने एक पन्ने की ओर संकेत करते हुए कहा—"यह फाकनर-शैली का नमूना है, यह थौर्नटन विल्डर की शैली है और यह

गर्टरूड स्टीन की; और यह जायस की शैली का सुलझा हुआ संस्करण है,—चेतना का अन्तर प्रकाश जैसा का तैसा मौजूद है, तिस पर खूबी यह कि इसके शब्दों का रूप बोधगम्य है; और यह अमरीकी जायस जेम्स थर्बर की शैली है जो आजकल बहुत प्रचलित है; अगर अधिक जनप्रिय शैली चाहते हों तो यह देखिये, मिचेल और स्टुअर्ट ह्वाइट की शैली के नमूने भी यहाँ दिये हुए हैं।"

यह सब देख कर मैं अचरज में रह गया।

"हद है!" मैंने कहा,—"यह तो मैंने सुना था कि अमरीका में अनेक ऐसे प्रेत लेखक हैं जो लिखते तो खुद हैं, मगर वह छपता दूसरों के नाम से है। लेकिन इस चीज ने बाकायदा व्यापार की शक्ल ले-ली है, यह मेरी कल्पना से बाहर था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि ·····"

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है?" युवती ने अपनी भौहों में बल डालते हुए कहा,—"तुम तो इस तरह बातें करते हो मानो सीधे टिम्बकटू से चले आ रहे हो।"

"यह मास्को के रहने वाले हैं," पी. एच. पी. ने मेरा परिचय दिया।

युवती ने सकपकाई-सी दृष्टि से मेरी ओर देखा। फिर अगले ही क्षण उसके चेहरे पर चमक आगई।

"ओह, तो तुम शायद वहाँ से भागकर आये हो।" युवती ने कहा,—"और अब तुम अपने कड़वे अनुभव लिखना चाहते हो, ठीक है न? सोवियत संघ के बारे में हमारे पास बहुत ही दक्ष लेखक हैं। जो भी चाहो, तुम्हारे लिए लिखकर दे सकते हैं,—उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण, निबन्ध, लेखों की सीरीज। सीरीज के अनेक शीर्षक हमारे पास हैं, जैसे,—'साहित्य से शून्य देश', 'क्रेमलिन के गुप्त रहस्य।"

मैंने पी. एच. पी. की ओर कनखियों से देखा।

"मैं एक कहानी लिखना चाहता हूँ जिसमें 'सफेद टेलीफोन' का रहस्योद्घाटन किया गया हो।"

पहली बार युवती को जवाब देने में कुछ कठिनाई का सामना

करना पड़ा।

"अ-र-र······ मैं कह नहीं सकती······यह तो अजब-सा विषय है··· जटिल विषयों पर हम अधिक चार्ज करते हैं ···"

इसी बीच टेलीफोन की घण्टी बज उठी। युवती ने रिसीवर उठाया—"हलो . हाँ। एक लेख के लिए आर्डर?—सिनेटर ब्रू के लिए। हाँ, तैयार हैं। इसे कहाँ भेजें? ठीक, अभी भेजते हैं। क्या, कहा एक लेख और चाहिए? अच्छा······"

युवती को बात करते हुए छोड़कर हम बाहर चले आये।

[१६]

पी. एच. पी. की बुरी हालत थी। लगता था जैसे लड़खड़ाकर वह गिर पड़ेगा। जब तक हम एक पार्क में जाकर बेंच पर न बैठ गये, वह मेरी बाँह से चिपका रहा।

"तुम्हें शायद नहीं मालूम" उसने मेरे निकट खिंचते हुए कहा—"मैं खुद भी प्रेत-लेखक हूँ। पी. एच. पी. का अर्थ है, पब्लिशिंग हाउस का प्रेत। मैं पेशेवर लेखक हूँ। तीन उपन्यास, पचास से ऊपर कहानियाँ, अनगिनत लेख—साल में लगभग दस लाख शब्द मुझे लिखने पड़ते हैं। लेकिन मेरा अपना कोई नाम नहीं, खुद अपनी लिखी चीज़ों पर भी मुझे अपना नाम देने का अधिकार नहीं। मेरी तरह चार पी.एच.पी. और हैं जो बौस के यहाँ काम करते हैं। प्रकाशक जो नाम बताता है, उसे हम अपनी रचनाओं पर डाल देते हैं और खुद प्रेत की तरह निराकार बने रहते हैं।"

"अमरीकन लेखकों की एक कान्फ्रेंस में," मैंने कहा—"अलबर्ट माल्ट्ज ने प्रेत-लेखकों के बारे में एक बयान दिया था। लेकिन तब मुझे उस पर विश्वास नहीं हुआ था।"

"हम में से कुछ," उसने कहा—"प्रेत-योनि को छोड़कर अपने वास्तविक रूप में प्रकट होने में भी सफलता प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। अधिकतर तो अपने नाम से छपी किताब देखने की आशा

हृदय में सँजोये अपना सारा जीवन प्रेत-योनि में ही बिता देते हैं।"

"और जो प्रेत-योनि से बाहर निकल आते हैं, वे क्या करते हैं ?" मैंने पूछा, और खुद ही इस सवाल का जवाब देते हुए कहा—"वे फिर दूसरे प्रेत-लेखकों को बटोर कर अपने निजी दफ्तर कायम करते हैं ?"

"नहीं," उसने जोर से गरदन हिलाते हुए कहा—"अगर मुझे इस योनि को छोड़ने का अवसर मिले तो मैं कभी ऐसा न करूँ और अगर ऐसा करना भी पड़ा तो मैं सात जन्म भी उतना निर्मम नहीं हो सकता जितना कि हमारा बौस है। कुछ भरोसा नहीं, किस वक्त वह हमें निकाल बाहर कर दे। हर वक्त एक डर बना रहता है।"

"लेकिन तुम भी सच कहते हो," उसने कुछ रुक कर फिर कहना शुरू किया,—"प्रकाशकों की तरह हमारे लेखकों में भी व्यापारिकता घर करती जा रही है। भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं को वे 'लेखकों का बाजार' कहते हैं। उनका एक पत्र 'लेखकों का डाइजेस्ट' है। यह पाठकों के डाइजेस्ट से भिन्न है। इसका एक मात्र उद्देश्य लेखकों को उनके बाजार की स्थिति और उतार-चढ़ाव से परिचित कराना होता है। यह पात्र लेखकों को बताता है कि किस वक्त किस तरह की किताबों का बाजार गरम होता है और किस तरह की किताबों का ठंडा, आमदनी बढ़ाने के लिए किस तरह के लेख लिखने चाहिएँ और किस तरह के नहीं।

"खुद तुमने भी शायद यह बात देखी हो," वह कहता गया—"हमारे यहाँ किताबों और फिल्मों के नाम अधिकतर एक से होते हैं। कुछ वर्ष पहले तुम्हारे देश का एक लेखक इलिया ऐरनबुर्ग जब यहाँ आया था तो उसे भी यह बात अजब लगी थी। ऐरनबुर्ग चाहे जितना अच्छा लेखक हो परन्तु व्यापार के बारे में कुछ नहीं जानता था। असल में नामों का यह टकसालीपन व्यापारिक राजनीति के एक प्रमुख सिद्धान्त पर आधारित है। यह सिद्धान्त ग्राहकों का इनरशिया नाम से प्रचलित है। उदाहरण के लिए तुम एक नये ढंग और काट की जाकेट तैयार करते हो और उसका नाम तिलस्माती जाकेट रखते हो। विज्ञापन के द्वारा तिलस्माती जाकेट चल पड़ती

है। कुछ दिन बाद तुम एक टोपी बाजार में चलाना चाहते हो और इसका नाम भी तिलस्माती टोपी रख देते हो। नया नाम रखने से चलतू नाम अधिक ठीक होता है और ग्राहक आसानी से उसे पकड़ लेते हैं। इसके बाद तिलस्माती साबुन, तिलस्माती तेल, तिलस्माती बूट पालिश,—चाहे जिसको तिलस्माती बनाकर सहज ही चला सकते हो। हालीवुड ने यही तरीका अपनाया। बिंग कासबी का फिल्म 'रोड टू सिंगापुर' बहुत चला। इसके बाद 'रोड टू जंजीबार', 'रोड टू मोरक्को', 'रोड टू उटोपिया', 'रोड टू रियो' आदि का एक सिलसिला शुरू हो गया।

"यही तरीका अब साहित्य की दुनियाँ में भी इस्तेमाल हो रहा है। वान डाइक ने एक से नामों की बारह किताबें लिखीं—मालूम होता था एक ही टकसाल के ढले हुए पेटेन्ट सिक्के चले आ रहे हैं। एलेरी क्वीन ने एक ही नाम की छः किताबें लिखीं। खयाल यह था कि तीन किताबों को जो पाठक अपना चुका है, बिना विरोध के वह नम्बर चार, पाँच, छः को भी हजम कर लेगा। वूलरिच का तो नाम ही ब्लैक वूलरिच पड़ गया क्योंकि उसकी हर किताब के नाम का पहला शब्द 'ब्लैक' होता था। केवल नामों तक ही नहीं, बल्कि विषय और कथानकों में भी यह परिपाटी चल पड़ी। रेबेका नामक एक फिल्म है जिसमें एक अंग्रेजी गाँव के पुराने मकान में भयानक हत्या का दृश्य दिखाया गया है। बाद में बननेवाली दरजनों फिल्मों में इस फिल्म की सैटिंग्स दोहराई गई और हत्या तथा आतंक से भरे फिल्मों की एक बाढ़ सी आगई। कार्टर डिक्सन ने दरजनों किताबें ऐसी लिखी हैं जिनका कथानक और विषय एक-सा है,—लाश का एक कमरे में पाया जाना जिसका भीतर से ताला बन्द है। युद्ध के बाद प्रकाशित होने वाली किताबों में जितने भी हत्यारे आये वे सब अपने ही किसी सम्बन्धी की हत्या करते हैं,—पति, पत्नी, चचा, साले या बहनोई की। अन्तर सम्बन्धियों में पड़ सकता है, पर शेष सब कुछ एक सा रहता है। टकसाली नाम और टकसाली कथानकों की इस परिपाटी में आश्चर्य-जनक कुछ भी नहीं है। सामूहिक उत्पादन के साथ टकसालीपन का होना अनिवार्य है। व्यापारिकता जब साहित्य के सिर पर सवार

हो जाती हैं ... ..."

"तुम तो बाकायदा लैक्चर देने लगे," मैंने कहा,—"जरा धीरे-धीरे बात करो।"

"बीच में मत टोको," उसने कहा,—"लेकिन इस तरह अधिक दिन नहीं चल सकता। हमारे यहाँ अनेक लेखक ऐसे भी हैं जो व्यापारिकता का विरोध करते हैं। पर्ल बक ने काफी विरोध किया है। लिनक्लेयर ल्युविस को जब पुलिट्जर पुरस्कार दिया गया तो उसने उसे लेने से इनकार कर दिया। कुछ दिन हुए तीन सौ लेखकों, कलाकारों और सिनेमा-कर्मचारियों ने एक मैगजीन निकाला था। इसका नाम 'मैंतालीस' रखा था। पूँजीपतियों को इससे अलग रखा गया। देखो, व्यापारिकता से भरे इस देश में यह अव्यापारिकता सफल हो पाती है या नहीं।"

[१७]

उसने अपनी जेब से 'सैटर्डे रिव्यू आफ लिटरेचर' की एक प्रति निकाली। उसे मुझे देते हुए कहा,—"यह देखो, व्यापारिकता का अब हमारे यहाँ खुल कर विरोध होने लगा है। इस अंक में एडीविन सीवर का एक लेख छपा है। जरा इसे पढ़ो।"

सरसरी नजर से मैं लेख को देखने गया। सीवर ने घोषणा की थी कि अमरीकी साहित्य अपनी रचनात्मक शक्ति को खो चुका है और अधिकांश लेखकों का विकास कुण्ठित हो गया है। उसने अधिकांश लेखकों पर यह आरोप लगाया था कि वे साहित्य की दृष्टि से नहीं, व्यापार को नजर में रखकर किताबें लिखते हैं। संपादक, प्रकाशक और आलोचक किताओं की बिक्री की संख्या से उनकी परख करते हैं,—साहित्य की परख के लिए 'बिक्री' ही उनकी सबसे बड़ी कसौटी है।

व्यापारिकता की यह भावना, सीवर ने इस लेख में लिखा था, अमरीका के साहित्य पर छा गई है, बल्कि कहना चाहिए कि नासूर की भाँति अमरीकी-साहित्य के शरीर को खा रही है।

देखने के बाद मैंने पत्र उसको लौटा दिया।

"सीवर के कथनानुसार," मैंने कहा,—"अमरीकी साहित्य अपनी रचनात्मक शक्ति खो चुका है और उसका विकास अवरुद्ध हो गया है।"

"नासूर की बात उसने बहुत ठीक लिखी है," उसने कहा,—"यही हमारे साहित्य का सबसे बड़ा रोग है।"

"सो बात ठीक है। लेकिन आखिर यह नासूर है क्या बला?" मैंने पूछा।

उसने चकित होकर कहा—"इतनी देर से उसी का तो मैं रोना रो रहा हूँ। अरे भाई! यह नासूर है मुनाफे की भावना, जिसने हमारे साहित्य और लेखकों को ग्रस लिया है।"

"फिर वही भावना की बात," मैंने कहा,—"हालीवुड का जिक्र करते हुए जब मैंने बौसों—सूत्रधारों—का नाम लिया था तब भी तुमने उन्हें आँखों की ओट कर व्यापारिकता की भावना की बात कही थी। आखिर भावनाओं का दामन तुम कभी छोड़ोगे या नहीं?"

"हालीवुड की बात छोड़ो," उसने कहा,—"साहित्य की बात करो। किसी एक प्रकाशक और सम्पादक की नहीं, व्यापारिकता की भावना को इस रोग के लिए जिम्मेदार ठहराना पड़ेगा।"

वह सिगरेट के अवशेष को गटर में फेंकने के लिये उठा। मैं भी उसके साथ-साथ उठा। मेरा पाँव बैंच की टाँग में उलझ गया और लड़खड़ा कर पी. के ऊपर जा गिरा। पी. मेरा आघात न संभाल सका, और उसका सिर जोरों के साथ बैंच से जा टकराया। यह चोट डण्डे के आघात से कुछ कम गहरी नहीं थी।

मैंने उससे बार-बार माफी माँगी और अनुरोध किया कि अपनी बात को जारी रखे। धीमे स्वर में, पर आवेश के साथ, उसने कहना शुरू किया :—

"सच पूछो तो नासूर की बात करना बेकार है। असल में इस स्थिति के लिए वे लोग जिम्मेदार हैं जो हमारे साहित्य के सूत्रधार हैं; प्रकाशकों

और सम्पादकों पर जो शिकंजा कसते हैं। मारगन और उसके साझीदार—वैकर्स फिशर्स, वांडरबिल्ट और उनके भाई-बन्धु 'टाइम', 'फारचून' और 'लाइफ' जैसे पत्रों के मालिक । मारगन के हाथ में 'कोलियर', 'कन्ट्री होम' और 'वोमेन्स होम कम्पैनियन' की बागडोर है। वह उन्हीं पत्रों को हथियाता है जिन्हें लोग अधिक संख्या में पढ़ते हैं। लेकिन दूसरे पूँजीपति भी उससे पीछे नहीं हैं। 'न्यूजवीक' हैरीमन, ऐस्टर, ह्विटनी और मैलन के हाथ में है। यह पत्र भी भारी तादाद में छपता है। अमरीका में साठ बड़े परिवारों में एक कर्टिस परिवार है। उसके हाथ में 'सैटर्डे ईवनिंग पोस्ट' 'लेडीज़ होम जर्नल' और 'कंट्री जेण्टलमैन' की बागडोर है। दैनिक पत्रों का नाम मैं जान-बूझ कर नहीं ले रहा हूँ। तुम जानते ही होगे कि उनपर राकफैलर ग्रुप, मारगन ब्लाक, ह्विटनी बन्धु, मैलन हार्कनैस, ड्यूपों और गगनहाइम का कब्जा है। किताबों का सामूहिक उत्पादन करनेवाले बड़े-बड़े प्रकाशक भी उनके हाथों में हैं।"

"और उस पुरानी प्रतिष्ठित फर्म हार्पर ब्रदर्स क्या हुआ ?" मैंने पूछा।

"एक तरह से वे किताबों के व्यापार की दुनियाँ से अलग हो गये हैं। मैलन ने उनका सारा ताम-झाम खरीद लिया है। वैसे अमरीका में ६०० प्रकाशक हैं। लेकिन इनमें अठारह ऐसे हैं जो अमरीका के कुल साहित्य के आधे से अधिक के मालिक हैं,—आधे में रब और बाकी में सब वाला किस्सा है।"

पी. ने एक बार अपने सिर को सहलाया, फिर घड़ी की ओर देखा और उछलकर खड़ा हो गया। सम्भवतः उसे अपने बौस का खयाल आगया था। मेरी ओर अनुरोध-भरी नज़र से देखते हुए बोला :

"अपने ही पेशे के एक साथी से मिलकर बहुत खुशी हुई। लेकिन एक बात है जो तुमसे कहना चाहता हूँ। वह यह कि जब तुम अपनी इस यात्रा के बारे में लिखो तो मेरा और मेरी कही हुई बातों का उल्लेख सही-सही करना। मैं मानता हूँ कि दाग-धब्बे तो सूरज में भी होते हैं। अमरीकी साहित्य में भी अगर दाग हैं तो यह उसके सशरीर होने के लक्षण हैं। अमरीकी साहित्य राजनीति के अंकुश से मुक्त है और यहाँ के लेखक आज़ादी

के साथ अपनी लेखनी चलाते हैं। मैंने जो यह सब कुछ तुमसे कहा है, इसका उल्लेख करना न भूलना। नहीं तो," पी. ने अपने स्वर को कुछ धीमा करते हुए कहा,—"गैर अमरीकी कमेटी से मेरी जान नहीं बच पायेगी और ट्रूमेन-भक्ति का शिकंजा मुझे दर-दर का भिखारी बना देगा।"

"चिन्ता न करो', मैंने पी. को विश्वास दिलाया,—"मैं तुम्हारी बातों का गलत या अधूरा उल्लेख नहीं करूँगा।"

[१८]

पी. से विदा होकर मैं अपने होटल के लिए चल दिया। पी. और उसके दूसरे लेखकों के वर्तमान और भविष्य के बारे में अनेक विचार मेरे दिमाग को मथ रहे थे।

"अरे हैल्लो! दुःख है कि तुम्हारे यहाँ आने की खबर हमें पहले नहीं मिल सकी।" सहसा पीछे से मुझे एक उमङ्ग-भरी आवाज़ सुनाई पड़ी। अगले ही क्षण किसी ने मेरा कन्धा थपथपाया और फिर बड़े उत्साह से मेरे हाथ को अपने हाथ में लेकर पूरी मिलनसारी के साथ दबाया।

मैंने घूम कर देखा। मेरे चारों ओर हँसते हुए चेहरे दिखाई पड़ रहे थे।

हमें अभी पता चला कि तुम यहाँ आए हो। साथियों ने कहा कि हम तुमसे मिलें और मिलकर तुम्हारा और तुम्हारे देश की जनता का अभिनन्दन करें।" ढीले-ढाले कपड़े पहने एक लम्बे युवक ने कहा,—"हम लोगों की वेश-भूषा का खयाल न करना। अभी-अभी पुलिस और 'लिजन' के फासिस्ट गुण्डों से निबट कर आ रहे हैं।"

इस लम्बे युवक के पास ही एक दूसरा युवक, सैनिक वर्दी में, खड़ा था। उसके सिर पर पट्टी बँधी थी और गाल पर खरोंच का ताजा निशान था। उसने सीने पर लगे 'लाल सितारे' की ओर गर्व से संकेत करते हुए कहा,—"एल्ब नदी के तट पर तुम्हारे और हमारे देश के सैनिकों ने जब हाथ मिलाए थे तो एक सैनिक ने मुझे यह भेंट किया था। यही मेरा सबसे बड़ा

तमगा है ।"

"तुम हमारे साहित्यिक उत्पादन-केन्द्र का अध्ययन करने यहाँ आए हो," एक सुन्दर लड़की ने कहा। आँख के पास की अपनी चोट को हाथ से छिपाने का प्रयत्न करते हुए वह कह रही थी,—"मैंने तुम्हें बगीचे में देखा था···सिनेरियो विभाग के सामने। मैं अभिनेत्री का काम करती हूँ ।"

"उस प्रेत लेखक,—पी. एच. पी,—ने तुम्हें बहुत कुछ बता दिया होगा।" लाल सितारे वाले लड़के ने कहा,—"लेकिन एक बात वह गलत समझता है। वह यह कि अमरीका के डालर-सेठ,—यह बिलकुल साफ है कि,—न सब लेखकों को खरीद सकते हैं और न सब पाठकों को मूर्ख बना सकते हैं।"

"हालीवुड-साहित्य के लिए सचमुच खतरनाक बन गया है," ढीले कपडे पहने हुए लम्बे युवक ने कहा,—"लेकिन तुम्हारा वह पी. एच. पी. डालर-सेठों की ताकत को कुछ बढ़ा-चढ़ा कर भी पेश करता है। हालीवुड के साम्राज्यवाद का भी, दूसरे साम्राज्यवादों की तरह, अन्त निश्चित है। 'कन्वेयर सिस्टम'—जिसे असल में कतरन सिस्टम कहना चाहिए,—की बदौलत जिस तरह के फिल्म बन रहे हैं, वे हालीवुड की गाड़ी को अधिक दूर तक नहीं खींच सकते। दुनियाँ के पाठकों और सिनेमा देखने वालों को अपना दास बनाने का उनका सपना इन्हीं पाठकों और दर्शकों की लोहे की दीवार से टकराकर चकनाचूर हो जायगा।"

"इस गन्दगी से हम बराबर संघर्ष कर रहे हैं," लड़की के पास खड़े चश्मा लगाए एक युवक ने कहा,—"लेकिन अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। साल के सबसे रद्दी फिल्म को हम एंटी-आस्कर पुरस्कार प्रदान करते हैं। पूँजीवादी अखबार चाहे जितना प्रचार करें, हमारा यह पुरस्कार उनकी पोल खोल देता है।"

"अच्छे फिल्मों को जनता आज भी पसन्द करती है और हमेशा पसन्द करेगी। 'हमारे जीवन के सबसे अच्छे क्षण' नामक फिल्म को जनता ने बेहद पसन्द किया था। युद्ध के बाद के अमरीका से क्षुब्ध एक भूतपूर्व

सैनिक इस फिल्म का नायक था और

"इस फिल्म में एक दृश्य ठीक वैसा ही है जैसा कि हम अभी-अभी, अपने वास्तविक जीवन में, खेलकर आ रहे हैं," लम्बे युवक ने कहा,—"हार्स्ट द्वारा प्रकाशित एक अखबार को पढ़ते-पढ़ते एक फासिस्ट सोवियत रूस के विरुद्ध युद्ध की आवाज लगाने लगता है। अन्त में फिल्म के उस दृश्य में उसकी खूब मरम्मत होती है।"

"इस फिल्म की सफलता" लाल सितारे वाले युवक ने कहा,—"और काल्डवेल, सिन्दक्लेयर ल्युविस, हावर्ड फास्ट की पुस्तकें तथा चार्ली चैपलीन के फिल्म इस बात का प्रमाण हैं कि डालर अमरीका की समूची जनता और उसके सभी लेखकों को नहीं खरीद सकता।"

एक मीटिंग में उन्हें जाना था, इसलिए वे अधिक देर तक नहीं रुक सके। एक लड़के ने मुझे होटल के रास्ते का एक 'शार्ट कट' बताया कि अगर उधर से जाऊँ तो जल्दी पहुँचा सकता हूँ। सबसे विदा लेकर अभी मैं दो-चार कदम ही गया हूँगा कि मुझे अपने पीछे से पाँव पटकने और चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। बौस के आफिस की इमारत के प्रमुख दरवाजे से निकल कर अनेक लोग मेरी ओर चले आ रहे थे। एक खुली खिड़की पर झुका हुआ बौस, मेगाफोन हाथ में लिए, चिल्ला रहा था,—"हाँ, यही है।"

तरह-तरह की भली-बुरी आवाजें कसते हुए एक दरजन लोगों ने मुझे घेर लिया। इनके चेहरे और आकृति भावशून्य थे। उनके हाथों में फोटो लेने के कैमरे थे। हर कोण से उन्होंने मेरे चित्र लेना शुरू कर दिया। एक तो बिलकुल जमीन पर लेट गया और लेटे-लेटे ही उसने मेरा चित्र लिया। फिर सबने अपनी नोटबुकें निकाल लीं, और मेरे अधिक पास खिसकते हुए सवालों की बौछार लगा दी।

"शोलोखोव किस अमरीकी अभिनेत्री को सबसे अच्छा समझते हैं? तुम्हारे उपन्यासकार क्या अमरीका के गुप्त हथियारों और आक्रमण के आतंक का चित्रण करने वाली किताबें नहीं लिखते? सोवियत लेखकों में यूनियन के कितने सदस्य ईंटें ढोने का काम करते हैं। एहरेनबुर्ग अपने आफिस में कितने

प्रेत-लेखकों से काम कराता है ? अपनी पतलून पर सोवियत लेखक क्या चीज बाँधते हैं,—पेटी-या सस्पेण्डर ?"

एक रिपोर्टर ठीक मेरी नाक के नीचे उछल-उछल कर बार-बार एक ही वाक्य को दोहरा रहा था—"तुम्हारे देश में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं है, लेकिन हमारे देश की कला आजाद है।"

मैंने उसे और दूसरे रिपोर्टरों को चुप रहने के लिए हाथ का संकेत किया। और सब तो शान्त हो गये, मगर वह उसी प्रकार उछल-उछल कर कहता रहा,—"तुम्हारे देश में लिखने की कोई आजादी नहीं है, जबकि हमारे देश में है। तुम्हारे देश में······"

आखिर वह भी चुप हो गया, और मेरे पाँव के पास गुड़गुड़ी-सी बना कर बैठ गया और अपनी नोटबुक में, दूसरे रिपोर्टरों की तरह, वह भी जल्दी-जल्दी कुछ लिखने लगा। मैंने अपनी जाकेट की सलवटें सीधी कीं, और टाई को भी ठीक किया,—यह सोचकर कि सम्भवतः ये रिपोर्टर मेरे आकार-प्रकार और हुलिए का वर्णन लिख रहे होंगे। इसी बीच मैं यह सोचता रहा कि उनके सवालों के क्या जवाब मुझे देने चाहिएँ। मेरी नाक के नीचे उछल-उछल कर अपनी आजाद लेखनी की दोहाई देने वाला रिपोर्टर लिखते-लिखते, अपने ही लिखे हुए पर बीच-बीच में खुश भी होता जाता था। मैंने झुक कर देखा कि वह क्या लिख रहा था। मैं चकित रह गया। अपनी आजाद लेखनी से बड़ी आजादी के साथ, हालांकि मैंने अभी तक जवाब देना शुरू भी नहीं किया था, वह मेरे द्वारा दिए गए तथाकथित जवाब लिख रहा था। उसने लिखा था कि रूसी अखबारों के दफ्तर लेखकों के लिए हवालात से कम नहीं होते। सोवियत संघ के आधे से अधिक लेखकों को ईंटा ढोने का काम करना पड़ता है। एक सोवियत लेखक ने अमरीका के गुप्त हथियारों पर एक नाटक लिखना शुरू किया है, और लिखते-लिखते वह इतना आतंकित हो गया कि उसके हृदय की धड़कन बन्द हो गई, उसकी चेतना को लकवा मार गया।"

धीरे-धीरे मेरी आँखों के सामने जीवन की वास्तविकता स्पष्ट होकर

उभरने लगी। हार्ट के कुत्तों की टोली अब मेरे सामने से गायब हो गई थी, और उसकी जगह अमरीकी पत्र-पत्रिकाओं का एक अम्बार लगा हुआ था। सामने का चौक गुलदान बन गया था, बौस के ग्राफिस की भारी इमारत ने एक भीमाकार किताब का आकार धारण कर लिया था और दूर से एक चीखनुमा आवाज आ रही थी– "हमारी कला आजाद है···"

यह आवाज, कला की आजादी की आवाज, भीमाकार किताब के भीतर से निकल रही थी, जिसके कवर पर, सुनहरी अक्षरों में, लिखा था— "अणु-युग का अमरीकी साहित्य !"

मेरी कुत्ता रेगी मेरे पाँव के पास ऊँघ रहा था। सहसा कान खड़े करके वह गुर्रा उठा। किताब के भीतर से आनेवाली आवाज बन्द हो गई।

और, इस प्रकार, साहित्य और संस्कृति के अमरीकी केन्द्र की मेरी यात्रा समाप्त हुई।
